MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That the Enacting Formula, as amended, stand part of the Bill."

The motion was adopted.

The Enacting Formula, as amended, was added to the Bill.

The Title was added to the Bill.

SHRI SATISH AGRAWAL: Before I move the motion for the passing of the Bill as amended, I would request Sir, that consequential amendments be made in numbering the Clauses of the Bill.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Yes. I think, the House approves of it.

SHRI SATISH AGRAWAL. Sir, I beg to move:

"That the Bill, as amended, be passed."

MR. DEPUTY-SPEAKER: The question is:

"That the Bill, as amended, be passed."

The motion was adopted.

14.39 hrs.

KHADI AND VILLAGE INDUSTRIES COMMISSION (AMENDMENT) BILL

उद्योग मंत्री (श्री जार्ज फर्नांडिज) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग अधिनियम, 1956 का और संशोधन करने वाले विधेयक पर विचार किया जाए।"

उपाध्यक्ष महोदय,——

SHRI O. V. ALAGESAN (Arkonam): I would request the Minister to speak in English. He may oblige us by speaking in English.

श्री जार्ज फर्नांडिज : मैं समझता था कि कम से कम खादी और ग्रामोद्योग पर तो आप मुझे हिन्दी में बोलने देंगे।

SHRI O V. ALAGESAN: There is more of khadi in Tamil Nadu..

MR. DEPUTY-SPEAKER: You can use this device and listen to the interpretation in English.

श्री जार्ज फर्नांडिज : इस विधेयक में उपाध्यक्ष जी, एक बहुत महत्वपूर्ण संशोधन को हम पेश कर रहे हैं। वह है खादी के बनाने के बारे में। अब तक जब खादी की चर्चा चलती थी तो उसमें सूती, रेशमी और ऊनी धागे की बात चलती थी जिसको हथकरघे पर बनाया जाता था। इस संशोधन में हम कृत्रिम रेशेदार धागे के बारे में भी बात कर रहे है और पूरे खादी की कल्पना में इस एक नई चीज को जोड़ने का काम कर हैं। इस पर काफ़ी चर्चा पिछले कुछ दिनों मे देश भर में हुई है, हालांकि यह कल्पना बहुत नई नही। खादी क्षेत्र में काम करने वाले कई कार्यकर्त्ताओं ने इस प्रयोग को लगभग 7 वर्ष के पहले शुरू किया था। लेकिन विशेष कामयाबी उस समय मिली नहीं और कानून की भी एक दिक्कत उनके सामने आती थी क्योंकि खादी का मतलब सूती, रेशमी और ऊनी धागे तक ही सीमित रखने वाली बात इस कानून में जुड़ी हुई थी। जो नई नीति को आज हम चलाने

रहे हैं जिसमें खादी और ग्रामोद्योग में विशेष नौकरी निर्माण करने के साथ साथ इन उद्योगों को लोगों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी बड़े पैमाने पर लगाने का हमारा इरादा है। उसमें हमने यह महसूस किया कि अगर खादी का बड़े पैमाने पर निर्माण करना हो और जहां आज उसके प्रति लोगों के मन में कुछ ऐसी भावनायें है कि यह कपडा बहुत ज्यादा टिकने वाला कपड़ा नही है और इस कपडे का इस्तेमाल सभी लोग करने जैसे नही है, यह भी जो एक भावना लोगों के मन में रही है, अगर इसको निकालना हो तो फिर इस कृत्रिम रेशेदार धागे का इस्तेमाल खादी बनाने में हमें चाहिए।

खादी के सभी कार्यकर्ताओं से भी इस मसले को ले कर काफी बहस हो गई और खादी और ग्रामोद्योग आयोग ने इस पर अपने सभी सम्बन्धित लोगों से चर्चा होने के बाद राय भेजने का काम किया और उसके आधार पर आज इस विधेयक को हम पेश कर रहे हैं कि जिसमे खादी के बारे मे एक बुनियादी परिवर्तन लाने की बात को हम कर रहे हैं।

एक और संशोधन इस विधेयक के माध्यम से हम कर रहे है। उपाध्यक्ष जी, आज खादी और ग्रामोद्योग आयोग की जो सदस्य संख्या है जो कम से कम 3 और ज्यादा से ज्यादा 5 तक है, उसको हम 2 से बढ़ा रहे हैं। हम उन की संख्या 5 की जगह 7 करना चाहते हैं। इस के लिए हम इस सदन की पब्लिक एकाउंट्स कमेटी की एक रिपोर्ट को आधार मान रहे है, जो 1972-73 में दी गई थी और जो इस संस्था के फ़िनांशल एडवाइजर से सम्बन्धित थी। मगर इस आयोग के चीफ़ एक्सीक्यूटिव आफ़िसर और सचिव की बात को भी हम इस संशोधन के साथ जोड़ रहे हैं। 1972-73 और 1973-74 में पब्लिक एकाउंट्स कमेटी ने यह सिफ़ारिश की थी कि फ़िनांशल एडवाइजर कमीशन का सदस्य होना चाहिए। उन की इस सिफ़ारिश को हम ने स्वीकार किया है। पहले सचिव की नियुक्ति सरकार करती थी कमीशन से सलाह-मश्वरा कर के, और चीफ़ एक्सीक्यूटिव आफिसर की नियुक्ति कमीशन करता था सरकार से सलाह-मश्वरा कर के। इन दोनों बातों को एक में जोड कर, चीफ़ एक्सीक्यूटिव आफ़िसर को भी इस आयोग का सदस्य बनाने के लिए हम एक संशोधन इस विधेयक के माध्यम से पेश कर रहे है।

1956 के पुराने कानून के अनुसार 500 रुपये से अधिक तन्ख्वाह वाले किसी भी कर्मचारी की नियुक्ति आयोग खुद नही कर सकता था, इस के लिए उसे सरकार के पास आना पडता था। 500 रुपये की तन्ख्वाह की स्थिति 1956 में जो कुछ भी रही हो, लेकिन अब उस का कोई खास मतलब नही रहा है। इन नियुक्तियों के सम्बन्ध में सरकार के पास आने मे जो बिलम्ब होता है, हम उसे दूर करना चाहते है, और इस लिए पुराने कानून मे नियुक्तियों के बारे मे जो बंधन थे, हम उन को हटा रहे है, ताकि कमीशन ठीक ढंग से काम कर सके। जिस तरह अन्य संस्थाएं अपने कर्मचारियों की नियुक्ति स्वयं कर सकती है, वह अधिकार इस संशोधन के माध्यम मे हम इस संस्था को भी दे रहे हैं।

एक मामूली सा संशोधन और है। इस सदन की रूल्ज कमेटी की सिफारिश के अनुसार, और इस सदन की राय पर अमल करने के लिए, हम ने रूल्ज को इस सदन के सभा-पटल पर रखने के बारे में एक प्रावधान इस विधेयक में जोड दिया है।

मगर, जैसा कि मैंने कहा है, इस विधेयक में मुख्य बात यह है कि खादी में एक नया परिवर्तन लाया जा रहा है,

[श्री जार्ज फर्नान्डिज]

इस परिवर्तन के माध्यम से खादी को और विकसित करते हुए लोगों की बेकारी की समस्या को हल करने की ज़िम्मेदारी हम ने खादी और ग्रामोद्योग आयोग पर डाली है। एक तरफ़ हम खादी के काम को आगे बढ़ाना चाहते हैं दूसरी तरफ़ जनता को खादी के कपड़े का इस्तेमाल करने के लिए और अधिक प्रेरित करना चाहते हैं इसी लक्ष्य से हम इस विधेयक को पेश कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह सदन इस संशोधन विधेयक को स्वीकार करेगा।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Motion moved:

"That the Bill further to amend the Khadi and Village Industries Commission Act, 1956, be taken into consideration"

SHRI HUKMDEO NARAIN YADAV (Madhubani): I beg to move:

"That the Bill be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the 12th July. 1978." (1)

SHRI B. P. MANDAL (Madhepura): I beg to move:

"That the Bill be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the 31st July, 1978." (4)

SHRI A. K. ROY (Dhanbad): I beg to move:

"That the Bill be circulated for the purpose of eliciting opinion thereon by the 9th August, 1978." (6)

SHRI B. K. NAIR (Mavelikara): As has been presented by the Minister in charge this Bill looks like a very innocent and innocuous thing, but it is not so. At the outset I will make it clear that I am not at all objecting to...

DR. RAMJI SINGH (Bhagalpur): I have also got my amendment.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You must know the procedure of the House, Dr. Ramji Singh. Only motions for circulation of the Bill are moved at this stage. Other amendments come when the clauses are taken into consideration.

Mr. Nair, please continue.

SHRI B. K. NAIR: The most mischievous part of the Bill is the redefinition sought to be made in the word 'khadi'. The other parts are, of course, not very material. They are administrative matters like appointment of Commissioners, etc. Whatever it may be, they are not very much of any concern but with this redefinition of 'Khadi', I beg to submit Khadi is being finished and it is being eliminated from the national scene. It is the murder of Khadi.... *(Interruptions)*

What is the concept of Khadi? It is not a commercial commodity. It is not a product for market transaction. The excuse given here is that the Khadi Commission recommended it because of the varying tastes and trends in the consumer market.

When Mahatma Gandhi evolved the scheme of Khadi 50 years ago, he was not concerned about the taste. He was not concerned about the market. He was not at all interested in these things. He insisted that unless the yarn spun on the charkha in his ashram was made into cloth by a particular date, he would rather prefer to go naked. That is how he insisted on this item of Khadi. Gandhiji evolved the 18 point constructive programme. That constructive programme was the programme for regeneration of the country, for building up our villages and for awakening the nearly-dead masses of the people. And you know the priority he has given to Khadi. He called Khadi the kingpin of the 18 point

constructive programme. There are other items which are equally important like the Harijan welfare, labour organization, service of lepers, Hindu-Muslim Maitri etc. With all this he said, 'Khadi is the kingpin of my pogramme.' He further explained, 'Khadi is the centre of my solar system.' That was the importance Khadi occupied in his scheme. For Gandhiji Khadi was not a mere commercial product.

Khadi is associated with our freedom movement. It is the very symbol of our national movement. It is the greatest heritage that the Father of the Nation bequeathed to this country. For what? For regeneration of the country. And, now, after fifty years, when people like, Shri George Fernandes and Shri Morari Desai sit down for drawing up the plan, Khadi continues to be the kingpin. Khadi continues to be the centre of the solar system. For them also it is No. 1 item in the regeneration of the country. This has established the fact how valid, how very important and how inescapable was this programme of production of Khadi.

What is the idea of redefinition? He says, because of the varying tastes, the definition of Khadi is going to be recast by the inclusion or man-made fibre. A very innocent thing. A very innocuous thing. But is it really a man-made fibre? It is machine-made hundred per cent. Then where does it come from? Not only from India, it may come from abroad also. Only spinning may be done in India but the manufacture of the fibre can be made in India or even outside.

I remember a few days ago a very important man in the man-made fibre industry like the Chairman of the CAFI (Chemicals and Fibres of India), a hybrid child of the ICI, commended this programme and asked, 'Why not Khadi-makers go in for synthetic fibres?' So many statements like that have emanated from companies manufacturing synthetic yarn and they want to come into the national scene. They behave as if they have all of a sudden become very patriotic, wanting to contribute their own share in the matter of rural reconstruction. But what happens is this: they want to dump the whole stock with them on the Government of India and the Khadi Commission. And the very obliging Minister is always prepared to accept them!

We have raised protests against the multi-nationals. But even the suggestion of multi-nationals from our side is revolting to Mr. Morarji Desai. He has been accusing us of seeing multinationals all-round, raising the bogey of multi-nationals every now and then.

But in this case the multi-national ICI and its child the CAFI (The Chemicals and Fibres of India) and other synthetic fibre manufacturers are all very much interested.

And, by the introduction of man-made fibre, with 25 per cent fibre and 75 per cent cotton, or the other way, they are going to dump their entire surplus product into the market.

Sir, what was Gandhiji's idea about Khadi? As I said, Khadi was the kingpin of Gandhi's programme. Pandit Jawaharlal Nehru called it the 'Livery of freedom.' For him it was a political weapon. Gandhiji went very much beyond that. For Gandhiji, it was a weapon of national reconstruction.

Now, Sir, why should people wear Khadi? Because, when they purchase Khadi, every paisa of it goes to the poor man, the man who produces cotton, the spinner, the boy who does the carding, the weaver and the others. The entire family is getting involved in the production process.

Now, the other day, the Minister of State in the Ministry of Industries

[Shri B. K. Nair]

was explaining in the House that the wages of the Khadi worker ranges from Rs. 3 to Rs. 8 per day. It may be even much less, even one rupee a day. I see this from this Year's Book brought out by the Labour Department. The minimum wage of an Unskilled Workman in the rural area is as low as one rupee in several States and Rs. 1-25 in so many others, whereas, what is the condition of the workers employed in the Synthetic Fibre Industry?

I know, in our poor State, Kerala, there is a factory manufacturing synthetic fibre. The workers there get Rs. 800 to Rs. 1,000 per head per month. Most of them are in the income-tax paying bracket. The workers there got a bonus of 42 per cent last year. This company is paying a dividend of 30 to 40 per cent every year.

Between a wage rate of Rs. 30 per day on the one hand and a wage of Re. 1 per day on the other, where is the synthesis, where is the coordination? Can we say that the worker getting Rs. 30 a day is also a Khadi worker? It is absurd to say that.

I am not against manufacturing this funny product. They can do it. If they want to do it, let them do it. I have no objection. But then, I say, don't call it Khadi. Khadi is a sacred name. The name was given to it by Mahatma Gandhi. Please do not tamper with it. Don't sabotage a sacred name. Don't sell it in your Khadi Depots. Your Khadi Depot is meant only for the hand-made articles. It is meant for the sale of hand-made oil, hand-made soap and such other articles only. Don't indulge in the sale of spurious adulterants. And, the introduction of synthetic fibre in this field would only mean poisoning the very fountain-head of our national reconstruction. It is a dangerous and deadly poison that would vitiate the entire national life.

15.00 hrs.

I approach this scheme from a different angle, I believe that the Members of the House as a whole, *intoto* will oppose this Bill. Of course, we are not going to oppose the scheme as a whole. I concede that there may be a justification for manufacturing the handloom clothes containing synthetic yarn. Let them be generous as they had been in the case of Coca Cola by replacing it by some new product calling it "77". Similarly, this new thing they intend to produce may be called "78" or some other thing. Let them go ahead but let them not sell it in our Khadi depots.

One more point and I have done. We have been wearing this for the past so many years not for the fun of it. There is a revolutionary concept behind it. Suppose we the millions of this country, take to wear khadi only. This will be our first step towards the national re-construction. Let everybody go in for a uniform cloth just as we would like to make it uniform in the matter of incomes and wages to the people. This, of course, is a far cry. But why not make it uniform in the matter of our dress at least? Why not make khadi the article of daily wear for all? If there is going to be a revolutionary change, let us do that first.

MR. DEPUTY-SPEAKER: You will have to wind up now because there are quite a few speakers. Only two hours are allowed for this Bill.

SHRI B. K. NAIR: I want a minute more. There is no compromise on our side in regard to this issue. As I said this is a matter of emotional life. It was through the piece of cloth, khadi, that we won our freedom, It was a symbol of our national renaissance. So many millions of people had died with this piece of cloth, khadi flags, national flags in their hands. So many heads were broken and so many of our national leaders who died had been shrouded with khadi at the time of their cre-

mation It is a sacred thing so far as we are concerned It is just like our temples Let them not tamper with that Let them leave it like that Let them go in for the manufacture Let them adopt some other name The only amendment suggested here is about the rejection of the definition of the world This has come from no less person that Kumari Maniben Patel I also find another gentleman supporting the addition of a clause like introduction of power loom Let them go in for the powerloom Hand it over to the mill Do that But don t tamper with the khadi like that Leave it alone because it is a sacred thing to so many of our people It is a sacred thing a thing of sanctity to all of us And it is a part of our emotional life We call it a part of our life

श्री राममूर्ति (बरेली) डिप्टी स्पीकर महोदय ऐसे तो खादी का स्थान इस मुल्क मे अनादि-काल से रहा है लेकिन मशीन युग के आने से खादी की महिमा को बहुत बडा धक्का लगा है और दुनिया के बाजारो मे हिन्दुस्तान के कपडे की जो महिमा थी, जो मान्यता थी, वह जाती रही। गाधी जी ने अपने जमाने मे खादी को एक नया स्वरूप दिया और जो खादी के पहनने वाले थे, उन को मान-सम्मान मिला और इस मुल्क की वस्तुस्थिति को देखते हुए उन को इस बात का भी अहसास हुआ कि यहा बहुत से ऐसे लोग है जिन को काम नही मिलता है, जो बहुत गरीब है उन के लिए कोई न कोई ऐसा साधन होना चाहिए जिस से उन का जीविकोपार्जन हो सके। उसी से यह हमारी खादी दिन पर दिन तरक्की करने लगी और एक माइने मे कहा जाए तो उन्होने खादी को अपनी स्वतन्त्रता की लडाई का एक अस्त्र बनाया और इतनी महिमा खादी को मिली। समय बीतने के बाद कुछ लोगो के दिलो मे ऐसा ख्याल पैदा होने लगा कि खादी कोई फूड चीज है और इस मे अच्छे डिजाइन वगैरह नही निकलते हैं और इस की कीमत को देखते हुए इस का कपडा ड्यूरेबिल और मजबूत नही होता है। कुछ लोगो का यह विचार होने लगा कि अच्छा कपडा नही बनता है। गाव के सीधे सादे लोग ही इस को पहनते हैं और बाकी लोग इस को इस्तेमाल नही करते हैं। जो छापे का कपडा होता है, उस को तो फेशनेबिल लोग खूब खरीदते है लेकिन खादी के बारे मे यह आम ख्याल है कि इस की कीमत ज्यादा है और इसका कपडा ज्यादा नही चलता है और यह इस बात से जाहिर होता है कि खादी के कपडे का जो स्टाक है, वह काफी पडा रहता है और उस की खपत नही होती है। जितना कपडा पैदा होता है उतनी उस की खपत नही है। इसलिए यह मुनासिब समझा गया कि खादी जो है इस मे मजबूती लानी चाहिए। मेरे मित्र जो उधर बैठे है वे कह रहे थे कि जो मेन-मेड फाइबर है यह बाहर से आता है। मुझे इस के बारे मे ज्यादा मालूमात नही है लेकिन जो प्रदर्शनी अभी दिल्ली मे हुई थी, उस मे मैन देखा कि पोलिएस्टर को किस तरह काता जाता है और किस तरह सूती धागे से मिलाया जाता है। यद्यपि उस की कीमत ज्यादा होती है लेकिन उस को इस के साथ मिलाने से कपडे मे मजबूती आएगी और यह जो शिकायत लोगो को रहती है कि खादी का कपडा ज्यादा चलता नही है, यह जो भ्रम पैदा हो गया है वाकयात चाहे जो कुछ भी हो, वह दूर हो जाएगा। यह हो सकता है कि मै इस के बारे मे ज्यादा न जानता हू कि यह बाहर से आता है लेकिन जहा तक बुनने का ताल्लुक है, इस को बुनते हुए मैने देखा है और वह जो काता जाता है, उसको भी देखने का मुझे अवसर मिला है। उस से एक बात सिद्ध हुई कि पोलियेस्टर मिला सूत भी खादी की परिभाषा मे आता है। खादी हाथ से बुनी जाये हाथ से काती जाये और उस के बनाने वालो को निर्धारित वेजेज मिलने चाहिएं, वही खादी है। खादी

[श्री राम मूर्ति]

के बनाने वालों का एक्सप्लायटेशन और शोषण नहीं होना चाहिए । इस तरह से खादी को प्रोटेक्शन भी इस फार्मूले से दिया गया है । हमेशा से जमाना परिवर्तनशील रहा है, तरक्कीपसन्द रहा है । आज जो दुनिया में मशीनों से कपड़ा बनता है, वह फैन्सी और खूबसूरत बनता है । इसलिए अगर हम चाहते हैं कि खादी को अवाम तक पहुंचाएं और आजकल के जमाने के तरक्कीपसन्द लोग उस को पसन्द करें, तो इस के लिए खादी के डिजाइन्स अच्छे होने चाहिएं और अच्छे डिजाइन्स जो हों उन को इस काम में लगाया जाए और अच्छे पैसे उन को दिये जाएं जिससे खादी के अच्छे डिजाइन निकल सकें । अच्छे डिजाइन बनाने से खादी की मान्यता और प्रचलन भी समाज में खूब हो जाएगा ।

एक बात और अर्ज करना चाहता हूं कि इस में एक आफर्स फाइनेन्स का दिया जाएगा । मेरा कहना यह है कि खादी में जितने भी काम करने वाले हों चाहे ऊपर के स्तर के हों या नीचे के स्तर के हों, खादी के काम में उन्हीं लोगों को लगाया जाए, जिन की प्रवृत्ति खादी की तरफ़ हो, जिन को खादी से प्रेम हो और खादी की फिलास्फी को मानते हों । अगर ऐसा नहीं है, तो अफ़सरों का दिल वहां नहीं लगता है और खादी का काम अच्छा नहीं हो सकता है । जनता सरकार की यह पालिसी है कि रूरल इंडस्ट्रीज, खादी और कृषि पर जो आधारित व्यवसाय हैं, उन को तरक्की दी जाए, उन का विकास किया जाए और उन को फैलाया जाए । खादी एक ऐसी चीज है जिस को भारतवर्ष में, हर प्रदेश, हर समाज और हर गांव के अन्दर, लोग भली भांति जानते हैं और इस को जितना भी बढ़ावा दिया जाएगा, जितना भी इस पर ज्यादा पैसा खर्च किया जाएगा, उतनी ही इस की तरक्की होगी । मैं तो यह सुझाव देना चाहूंगा कि खास तौर से जो सरकारी एजंसियां हैं, जो सरकारी कपड़ा खरीदती हैं पोशाक के लिए, वर्दी के लिए, उनको खादी खास तौर से लेनी चाहिए । दूसरी मेरी यह ख्वाहिश है कि हिन्दुस्तान के सभी लोग, जो खद्दर नहीं पहनते हैं, उन को भी थोड़ा बहुत खादी का कपड़ा अपने घरों पर जरूर इस्तेमाल करना चाहिए क्योंकि अगर ऐसा होता है तो बहुत बड़ी तादाद में हमारे देश वासियों को रोजगार मिल सकता है और वे अपने घर पर बैठे-बैठे इस कार्य को कर सकते हैं । और साथ ही साथ उन्हें पूरा रोजगार मिलता है । इसके साथ ही उन्हें आधा रोजगार भी मिलता है जैसे घर की स्त्रियां घर का काम करने के बाद थोड़ी बहुत खादी बनाने से अपनी आमदनी बढ़ा लेती हैं । इससे उनके परिवार की आमदनी में थोड़ी बहुत बढ़ोतरी हो जाती है । इसलिए इस बात की कोशिश होनी चाहिए कि खादी को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा दिया जाए । इसके साथ ही इस बात का भी ध्यान रखा जाए कि इसमें ऐसे डिजाइंस बनाये जाएं जिससे लोगों में खादी में दिलचस्पी पैदा हो । इस तरह से खादी के काम में लगे लोगों को ज्यादा रोजगार मिल सकता है और खादी की मान्यता और खपत में भी इजाफ़ा हो सकता है ?

इन शब्दों के साथ मैं इस विधेयक का समर्थन करता हूं ।

श्री सौगत राय (बैरकपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं खादी और ग्रामोद्योग शिल्प आयोग विधेयक का पूरी तरह से विरोध करता हूं । मैं श्री जार्ज फर्नांडिस जी पर कुछ आरोप भी लगाऊंगा । मैं नहीं कहता कि यह सब मिस्चिवियसली किया गया है लेकिन मैं यह जरूरत समझता हूं कि जो लोग गांधी जी की परम्पराओं के बारे में सोचते हैं, उन पर श्रद्ध रखते हैं, उन लोगों पर यह एक बड़ा आघात है । मैं जार्ज फर्नांडिस

साहब से कहना चाहता हूं कि उन्होंने गांधी जी के खिलाफ़ काम किया है। मुझे लगता है कि वे गांधी जी के खादी दर्शन को शायद समझ नहीं पाये हैं।

खादी का दर्शन क्या था ? जब हमारी स्वतन्त्रता की लड़ाई शुरू हुई और गांधी जी हिन्दुस्तान में आये तो उन्होंने दो चीजें देखीं। एक तो यह देखी कि ब्रिटिशर्स अपना साम्राज्य फैला रहे हैं और दूसरे यह कि वे मेनचेस्टर से कपडा लाकर यहां बेच रहे हैं और हमारे शिल्प उद्योग को नष्ट कर रहे हैं। इसलिए गांधी जी ने विलायती कपड़ा छोड़ने की आवाज उठाई। दूसरी बात उन्होंने यह कही कि हम देश में खादी को चालू करें। उन्होंने खादी को अपना रचनात्मक कार्यक्रम बनाया।

हिन्दुस्तान में खादी को चलाने के पीछे गांधी जी का दर्शन क्या था, गांधी जी की थ्योरी क्या थी ? वे यह सोचते थे कि हिन्दुस्तान गांवों में रहता है और गांवों में लोग साल भर में दो महीने काम करते हैं—फसल बोने के समय से फसल काटने के समय तक। बाकी वे खाली बैठे रहते हैं। गांधी जी ने उन लोगों को काम देने के लिए खादी का कार्यक्रम चलाया कि कोई भी आदमी अपने घर में बैठ कर रूई से धागा बना कर दिन में चार आने या आठ आने कमा ले। गांवों में जो कांग्रेस का जोर बना, वह गांधी की जी के चर्खे से बना। कांग्रेस के लोग इसी चर्खे से गांव के लोगों के सम्पर्क में आये। बाद में 1930 और 1942 के आन्दोलनों में फिर इन्हीं लोगों ने कांग्रेस का साथ दिया। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि गांधी जी ने इस खादी के द्वारा एक तरफ़ गांव के लोगों को ब्रिटिश साम्राज्यशाही के खिलाफ़ इकट्ठा किया और दूसरी तरफ़ गांव के लोगों में जो बेरोजगारी थी, उसको कम करने के लिए उन्हें काम मिला। आप इस तरफ से हट गये हैं। अगर रूई से धागा नहीं बनाया जाता है तो चर्खे का काम बर्बाद हो जाता है। आप धागे से कपड़ा बनाते हैं। धागे से कपड़ा तो हेण्डलूम और पावरलूम में भी बनता है। खादी का जो सिद्धान्त है वह तो रूई से धागा बना कर काम करने का है। लेकिन मैं समझता हूं कि जार्ज फर्नांडिस साहब सोचते हैं कि इससे बेरोजगारी हल होगी। मैं तो खादी पहनने वाला हूं और हेबिचुअल खादी वियरर हूं। जार्ज फर्नांडिस साहब तो कभी-कभी खादी पहनते हैं, कभी-कभी वे टेरीलीन भी पहनते हैं। मैं बराबर खादी पहनता हूं और समझता हूं कि जो खादी पहनते हैं वे ज्यादातर सैंटीमैंटल वैल्यू के लिए पहनते हैं। आजादी की लडाई से ही यह परम्परा चली आई है। इसीलिए वे खादी पहनते हैं। इस में थोडा आप इम्प्रूवमेंट कर सकते हैं। पहले आर्डिनरी चर्खा था। उसके बाद हमने अम्बर चर्खा चलाया। उसके बाद दूसरी तरह का—चर्खा चालू हुआ। लेकिन खादी का जो कंसैप्ट है वह कंसैप्ट बदला नहीं। आप रेवोल्यूशन करना चाहते हैं। मैं पूछना चाहता हूं कि क्यों आप हमारी परम्परा के साथ खिलवाड करना चाहते हैं ? हमारी परम्परा की उपेक्षा कर आप यह रेवोल्यूशन न करें। दूसरा भी कोई तरीका हो सकता है।

मूल प्रश्न क्या है ? मंत्री महोदय ने आब्जैक्ट्स में बताया है कि वह खादी को लोकप्रिय करना चाहते है ताकि ज्यादा लोग खादी पहने। लेकिन लोकप्रिय करने में कभी हाथ से बना हुआ खादी मिल के फाइबर के मुकाबले टिक नहीं सकेगा, उसके कम्पीटीशन में नहीं आ सकेगा। मास स्केल प्रोडक्शन की जो इकोनोमी है यह दूसरी है हमारी खादी की इकोनोमी से। खादी एसेंशियली एक लेबर इंटेंसिव इकोनोमी है और मास स्केल प्रोडक्शन एक कैपिटलिस्टिक इकोनोमी

[श्री सौगत राय]

है। इस वास्ते दोनों में कोई कम्पीटीशन नहीं होना चाहिए। विल्लेज इकोनोमी को सुदृढ़ करने के लिए, गांवों की बुनियाद को मजबूत बनाने के लिए ही हम बराबर खादी को प्रोटेक्शन देते आए हैं। अभी भी हमें प्रोटेक्शन देते रहना चाहिए। इसको हम लेबर इंटैंसिव इकोनोमी के रूप में ही लें और जो पुराना कंसैप्ट है उसको हम बने रहने दें।

खादी का खर्चा कैसे कम किया जाए यह देखा जाना चाहिए। अभी ज्यादा आता है। उसके लिए आपको कम कीमत पर रुई देनी पड़ेगी, थोड़ी सबसिडी देनी पड़ेगी। अभी भी आप सबसिडी दे रहे है।

एक बात मैं बहुत साफ कहना चाहता हूं। खादी इंडस्ट्री में जितना भ्रष्टाचार है, गांधी जी के नाम पर खादी और विल्लेज इंडस्ट्रीज कमिशंज में जितना भ्रष्टाचार है उतना किसी अन्य इंडस्ट्री में नहीं है। इंगाल की बात मैं जानता हूं। जो लोग खादी कमिशन से पैसा लेते हैं, बोर्ड से पैसा लेते हैं हमारे कांग्रेस के पुराने लोग या दूसरे बड़े-बड़े लोग ये छोटे आदमियों को पैसा नहीं देते हैं, खादी इंडस्ट्री में जो लोग काम करते हैं उनको पैसा नहीं देते हैं। गांधी जी के नाम पर पैसा ले ले कर उन्होंने पांच-पांच मंजिले मकान खड़े कर लिये हैं। इस तरह से बहुत ज्यादा रुपया चोरी होता है। मेरा अनुरोध है कि स्टेट खादी बोर्ड्ज से आप स्टेटिसटिक्स मंगाएं और पता लगाएं कि कितना पैसा अभी भी बड़े-बड़े लोगों की तरफ बकाया पड़ा हुआ है जो वसूल नहीं हुआ है और उसके बारे में बोर्ड क्या कार्रवाई कर रहे हैं। मैं अपने प्रान्त की बात आपको बताता हूं। वहां एक रिजनल डायरेक्टर है। उसने एक बहुत बड़ा मकान बनवा लिया है। तीन-चार प्रतिष्ठान भी बेनामी, वाइफ तथा दूसरे के नाम से बना लिए हैं। यहां का पैसा ही लगाया है और वह पैसा लौटाया नहीं है। जो खादी इंडस्ट्री में काम करते हैं उनको आप को संगठित करना चाहिए। खास कर जो मिडलमैन हैं वे एक्सप्लायट इन गरीब लोगों को न कर सकें, इसकी व्यवस्था आपको करनी चाहिए। गांधी जी के नाम पर उनका एक्सप्लायटेशन तो और भी बुरा है। इसको देखने के लिए आपको कोई आयोग बिठाना चाहिए। स्वयं मंत्री महोदय को भी इस ओर ध्यान देना पड़ेगा।

अब आप खादी इंडस्ट्री में पालिस्टर चालू करने जा रहे हैं। जैसे पहले वी० के० नैय्यर साहब ने कहा है पोलिस्टर यार्न हिन्दुस्तान में खास तौर पर मल्टीनैशनल्ज बनाते हैं, आई० सी० आई०, अलकली एण्ड कैमिकल कारपोरेशन बनाते हैं। हमारे यहां विसकोस पोलिस्टर तैयार करने वाले बहुत कम कारखाने है। ये लोग खादी के नाम पर हमारे सेंटीमेंट्स से कमर्शियल एडवांटेज लेना चाहते हैं। जो परम्परा चली आ रही है उस से पैसा कमाने का साधन ढूंढना चाहते हैं। यह एक तरह का शोषण है। आप झूठमूठ ही समझाना हम लोगों को चाहते हैं। इसको होने नहीं देना चाहिए।

सब से बड़ी कमी मार्किटिंग की है, उसकी आर्गनाइजेशन की है। खादी की मार्किटिंग बहुत खराब है। बहुत सी बातें कही गई हैं कि हम मार्किटिंग को इम्प्रूव करेंगे। धारिया साहब ने एक बार कहा था कि खादी के माध्यम से पचास हजार शाप्स खादी और विल्लेज इंडस्ट्रीज कमिशन खोल करके पब्लिक डिस्ट्रिब्यूशन सिस्टम को सुधारेगा, बढ़ाएगा। अभी तक उस के बारे में क्या हुआ है पता नहीं। इस आयोग को बड़ा

काम करना है। डिस्ट्रीब्यूशन चैनल हमारी खादी शाप्स बन सकती हैं।

बहुत पहले एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कालेज, हैदराबाद ने खादी और विल्लेज इंडस्ट्रीज आयोग के बारे मे अपने कुछ सुझाव दिए थे। मैं जानना चाहता हूं कि उनका क्या हुआ है। क्या वह अभी ताक पर रखी हुई है? और एक बात यह है कि खादी केवल कपडे में नही है, गांधी जी ने कहा था कि हर चीज खादी मे बनाई जा सकती है। छोटी सी मैच बॅक्स जो बनती है उस के लिए भी हमने एक स्वेडिश कम्पनी जिसका नाम विमको है, उसको लाइसेंस दिया हुआ है। मैच बॉक्स को हम खादी के द्वारा बना सकते हैं। इसी तरह मैंने एक बार यहा जो इंडस्ट्री की नुमाइश हुई थी वहां खादी मे आर्डिनरी साबुन बनते देखा था जो काफी अच्छा है। लेकिन साबुन बनाने के लिए हिन्दुस्तान लिवर्स को लाइसेंस दे रखा है। क्यो देते हैं जब कि वही चीज हम अपने यहां खादी और ग्रामोद्योग के जरिए बना सकते है? खादी का साबुन हम प्रोमोट नही करते है। उसकी खास वजह यह है कि मार्किटिंग की सुविधा हम प्रोवाइड नही करते। जब कि हिन्दुस्तान लीवर्स मार्किटिंग की बढ़िया सुविधा प्रदान करके अपना माल बाजार में बेचता है। हमारे यहा हिन्दुस्तान लीवर्स और यूनियन कारबाइड का जितना अच्छा मार्किटिंग आर्गेनाइजेशन है क्या किसी भी सरकारी आर्गेनाइजेशन का उतना अच्छा है? नही है। यह लोग बाहर से आ कर हमारे देश मे अपना काम कर सकते हैं और यहां से पैसा लूट कर बाहर अपने देश में ले जाते हैं, वही काम हमारे यहां लोग क्यों नहीं कर सकते है? इसलिए मैं समझता हू कि यहां की परम्परा में जो लोग विश्वास करते हैं, जो कि सब तरफ हैं, वह हमारा समर्थन करेंगे। आप हैंडलूम पोलिस्टर कपड़ा बनाइये, पावरलूम पोलिस्टर कपड़ा बनाइये, लेकिन खादी का नाम न लीजिए। खादी का जो गांधी जी का कंसेप्ट है उस को वैसा ही रहने दीजिए। यह मेरा अनुरोध है। आप रिवोल्यूशनाइज करना चाहते हैं खादी और विल्लेज इंडस्ट्री को बढ़ाना चाहते हैं, जरूर बढ़ाइये। गांव में ज्यादा पैसा लगाना चाहते हैं जरूर लगाइये। लेकिन जो हमारी आजादी की लड़ाई की परम्परा है उस को खराब नहीं करना है और जो पार्शियल अनइम्प्लायमेंट को दूर करने के लिए गांधी जी का कंसेप्ट था खादी प्रतिष्ठानों को साफ सुथरा बना कर, हमे उसको नई दिशा दिखानी है।

इन शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हू।

डा० रामजी सिंह (भागलपुर): मान्यवर, खादी कोई दलगत विचार नही है, और इसीलिए हमारे विरोध पक्ष के सदस्य माननीय सौगत राय ने जो भावनायें प्रकट की हैं मेरी उनसे बहुत सहमति हैं। वस्तुत: खादी कोई वस्त्र नही है, बल्कि एक विचार है और इसके पीछे भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम की भावनाये जुड़ी हुई हैं। जार्ज साहब के लिए मुझे बड़ा आदर है, लेकिन जब खादी के सम्बन्ध मे कुछ हम विचार करते हैं तो हमें गांधी जी के विचारों को देखना होगा। गांधी जी ने कहा था:

"A day might come when the A.I.S.A. might stop issuing certificates. Anybody would then be free to sell khadi. That would be inevitable when khadi becomes universal. The A.I.S.A. will then function as the custodian of the ethics and the general policy of khadi and its business activities will cease. The people must become honest by habit and insist upon meticulous honesty on the part of producers of and dealers in khadi so that only the genuine stuff is sold and bought.

[डा० रामजी सिंह]

I have called khadi and charkha the symbols of non-violence. But it is said that there is dishonesty even in the certified bhandars."

जब खादी ग्रामोद्योग कमीशन का बिल लाया गया था 1956 में उस समय क्लाज 14 की धारा (एच) में यह स्पष्ट था ;

"For ensuring the genuineness and for granting certificates to producers of or dealers in khadi or the products in village industry"

और उसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था कि जैनुइन खादी। यह जो है (ई) में ·

"To maintain and assist in the maintenance of institution for the development of khadi and village industries"

और उसकी "जैनुइननैस" पर ज्यादा जोर दिया गया था। तो मैं कहना चाहता हूं कि यह खादी के विस्तार का प्रश्न नहीं है बल्कि आत्मा का प्रश्न है। विस्तार और विकास में अन्तर होता है।

पोलिस्टर के सम्बन्ध में हमारे प्रधान मंत्री जी ने यह विचार लाया और प्रधान मंत्री जी का मेरे हृदय में कितना आदर है यह कहने की आवश्यकता नहीं है। अभी खादी कमीशन से हमको एक पत्रक मिला है —

"Polyster Khadi and its implications"

वह कहते हैं ·

"A votary of Khadi has recently complained through a communication addressed to the Prime Minister that he was a habitual khadi wearer; it has become very costly and did not last long enough and that because of these shortcomings, a common man could not patronise it....The Prime Minister has very kindly forwarded that letter to the KVIC."

प्राइम मिनिस्टर साहब ने अभी हाल में एक छोटी सी गोष्ठी में यह विचार व्यक्त किया था कि पालिस्टर भी तो खादी है। गांधीजी ने इस बात को बहुत पहले देखा था। जब उनके समय में यह बातचीत हुई थी कि ये हैंडलूम और मिल के कपड़े को भी खादी कहा जाये, तो उन्होंने दृढ़ता से इसका विरोध किया था। उन्होंने कहा था कि या तो खादी कहिए या मिल का कपड़ा कहिए— जैसे एक व्यक्ति जीवित और मृत दोनों नहीं हो सकता है वैसे ही एक वस्त्र या तो खादी है या मिल का कपड़ा है ; वह दोनों नहीं हो सकता है। गांधीजी ने यह भी कहा था कि लोग वेजीटेबल घी की बात करते हैं यह गलत है। उन्होंने कहा था कि इसे वेजीटेबल आयल कहना चाहिए।

मेरा कहना यह है कि सरकार पालिस्टर के माध्यम से बेकारी को इस तरह समाप्त कर दें कि भारत में एक भी बेकार न रहे लेकिन खादी के साथ जो पवित्रता जुड़ी हुई है, गांधीजी की भावना जुड़ी हुई है, उसे देखते हुए खादी को अलग छोड़ दिया जाये, उस के साथ पालिस्टर को न मिलाया जाये।

जहां तक अर्थ-शास्त्र का सम्बन्ध है, मैं बहुत विनम्रतापूर्वक किन्तु दृढ़तापूर्वक कहना चाहता हूं कि रिचर्ड ग्रेग ने, या राजेन बाबू ने अपने "इकानोमिक्स आफ

खादी" में पालिस्टर की बात कभी नहीं कही थी। इसलिए मंत्री महोदय से मेरा निवेदन है कि वह खादी की आत्मा को कष्ट न पहुचायें। खादी केवल जनता पार्टी के लोगों का वस्त्र नहीं है, यह भारतवर्ष के उन सभी लोगों का वस्त्र है जो गांधीजी की अहिंसा में विश्वास रखते हैं और भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के ऊंचे मूल्यों में विश्वास रखते हैं।

इस विषय पर विनोबाजी से भी बातचीत हुई थी। इस पत्रक में कहा गया है

'After a month of the formation of the present Khadi and Village Industries Commission, all its members called on Vinobhaji and sought his blessings At that time, the question of manufacturing polyester khadi was also discussed That discussion was published in *Maitri*. At that time, it did not appear to us that Vinobhaji was against this idea"

इसलिए यह पग विनोबाजी की भावना के भी विरुद्ध है। खादी सर्वसेवा संघ के जीवन-मूल्य का एक अंग है। उन लोगों से भी मेरी बातचीत हुई है। शायद श्री मोरारजी देसाई के समक्ष उन्होंने कुछ न कहा हो, लेकिन उन को यह अच्छा नहीं लगा।

मेरा निवेदन है कि सरकार इस को प्रतिष्ठा का विषय न बनाय। मेरे जैसे बहुत से लोग खादी को एक वस्त्र के रूप में नहीं, बल्कि एक विचार के रूप में धारण करते हैं। मंत्री महोदय उन की आत्मा और भावनाओं को ठेस न पहुचायें। पोलिस्टर का उपयोग अन्य क्षेत्रों में किया जा सकता है, मगर उसे खादी के साथ न मिलाया जाये।

जब खादी कमीशन के सम्बन्ध में पहला बिल यहां आया था, तो आचार्य कृपलानी ने सावधान किया था कि अगर खादी की संस्थाये सरकार के अन्तर्गत आती जायेंगी, तो इस काम का क्षय होगा। आज वही स्थिति हमारे सामने उपस्थित है। गांधीजी ने जो आल-इण्डिया स्पिनर्स एसोसियेशन बनाई थी अगर वह स्वतन्त्र रूप से कार्य करती रहती, तो आज यह स्थिति न होती, खादी के साथ इस प्रकार का अन्याय होता।

15 29 hrs

[DR SUSHILA NAYAR *in the Chair*]

आचार्य कृपलानी ने 1965 में ही सावधान किया था कि सरकार को खादी की इन संस्थाओं को अपने अन्तर्गत नहीं लेना चाहिए। आज भी आचार्य कृपलानी ने इस का विरोध किया है।

मैं बहुत विनम्रता के साथ श्री जार्ज फर्नांडिस से प्रार्थना करूंगा कि इन सारी बातों को ध्यान में रखते हुए वह इस बिल के बारे में फिर से विचार करें। वह पालिस्टर को खादी के साथ न जोड़ें।

मैं इतना ही कहूंगा कि खादी की जो परिभाषा बापू ने दी थी वह यह दी थी कि जो हाथ से बनी हुई हो, हाथ से बुनी हुई हो और उचित मजदूरी लेकर बनी हो। जहां "एक्सप्लायटेशन" है वहां खादी नहीं है। अब यहां पर क्या होता है। वह हाथ से बनाया भी जायेगा, यह कह देते हैं, हाथ से कातना भी आएगा, लेकिन वह सामान कहां से आएगा? वह पैट्रोलियम प्रोडक्ट से बन कर आएगा। तो जो बड़ी बड़ी मशीनें हैं जिन के ऊपर पूंजी लगी रहेगी, ऐसी चीजों से बन कर जो चीज आएगी उन से जो कातना जायेगा और बुना जायेगा वह और

[डा० रामजी सिंह]

सब कुछ हो सकता है, खादी नहीं हो सकती है। गांधी जी ने कहा था कि यह सवाल मिश्रित खादी का बराबर खोटे सिक्के की तरह बाजार में आता रहता है। जैसे, खराब दुअन्नी या चवन्नी बाजार में आती रहती है। तो यह पोलिएस्टर खादी सचमुच में खादी का खोटा सिक्का है जो कभी जनता पार्टी लाएगी कभी कांग्रेस पार्टी लाएगी। इसलिए मेरी प्रार्थना है, विनती है कि बापू की भावना को ध्यान में रखते हुए, खादी के 60 वर्षों के इतिहास को ध्यान में रखते हुए इस के ऊपर विचार करें। खादी का अर्थशास्त्र और दर्शन सादगी में है, जैराजानी साहब के लिए मुझे बहुत आदर है लेकिन उन्होंने जो खादी चलायी वह शहरों में चल सकती है। खादी का मूल है स्वावलम्बन। मुझे याद है कि गांवों में पहले जब हमारे घर के लोग खादी पहनते थे तो वह धोती इतनी चौड़ी नहीं होती थी कि पहन सकें, तो उसे जोड़कर पहनते थे। खादी के दर्शन में सादगी और स्वावलम्बन का दर्शन छिपा हुआ है। गांवों में वह पोलिएस्टर कहां से आएगा? इसलिए इस तरह गांवों में जो खादी पैदा होगी वह परावलम्बी, मल्टी-नेशनल की खादी होगी। यह खादी की आत्मा को चोट पहुंचाना है। चार्ज साहब के लिए मुझे इतना आदर और सम्मान है कि मैं कोई कड़ा शब्द नहीं कहना चाहता हूं लेकिन मैं उन से कहूंगा कि वह एक नवयुवक हैं। ठीक है मोरारजी भाई का विचार हो सकता है, उन के बहुत विचार अच्छे हो सकते हैं लेकिन और लोगों के विचारों को ध्यान में रखते हुए, इस के ऊपर विचार करें और कोई दल या सरकार नहीं बल्कि राष्ट्र के मूल्यों के संदर्भ में, बापू के मूल्यों के संदर्भ में इस पर विचार करें।

*SHRI K. A. RAJU (Pollachi): Madam Chairman, I thank you very much for giving me an opportunity to say a few words on the Khadi and Village Industries Commission (Amendment) Bill which has been moved by my hon. friend, Shri George Fernandes, the Minister of Industry.

At the very outset I would like to say that I did not expect a Bill of this nature from the hon. Minister of Industry who was bold enough to wind up the working of international monopolies like Coco Cola, I.B.M. etc. Khadi is no longer the byword the poor people in the country. I would not be far wrong if I say that Khadi has become the dress of the rich people and the politicians. From the very fact of its high prices, Khadi can never be the poor man's cloth. Now this Bill will make Khadi a highly competitive commercial product, which would cater only to the sophisticated tastes of the elite. Mr. Fernandes is unfortunnately taking the responsibility for this.

Mahatma Gandhi made Khadi not a mere cloth but a symbol of nation's honour. He also made it an economic instrument. He wanted that every rural household should have a charkha, as it will help in removing the scourge of partial-employment in the rural areas. He started Swadeshi movement on the strength of Khadi.

This amending Bill to seeks to undo what the Father of the Nation did. In the parent Act, the definition of Khadi is:

> Khadi means any cloth woven on handloom in India from cotton, silk or woollen yarn handspun in India or from a mixture of any two or all of such yarns.

*The original speech was delivered in Tamil.

In the amending Bill, the definition of Khadi is changed as follows:

Khadi means any cloth woven on handlooms in India from cotton, silk, woollen or man-made fibre yarn handspun in India or from a mixture of any two or all of such yarns.

I would like to raise certain pertinent questions. Do we produce enough man-made fibre within the country for meeting the requirements of Khadi industry? By including man-made fibre, will not Khadi get despoiled? If man-made fibre is not produced in sufficient quantity will the hon. Minister import man-made fibre? Are we honouring Khadi by this or are we making it like any other mill-made cloth? I would like to have this information from the hon Minister while he replies to the debate.

I do not object to the augmentation of the Members of the Commission. I also do not say anything against the powers being given to the Commission for appointing highly-paid officials without consulting the Government. But I would like to warn that the Khadi and Village Industries Commission should not become a haven for all disgruntled officials or the officials who could not prove their mettle elsewhere. As the bureaucrats are known for their vanity, they are unable to acquaint themselves with the problems of the poor people. The Khadi and Village Industries Commission also has so far not been able to make any dent in the rural areas

Recently, the Chairman of the Commission stated that if the Government gave him Rs. 75 crores he would create 1 lakh job opportunities. The Central Government should sanction this sum as *ad hoc* grant so that one lakh job opportunities could be created quickly. As a sum of Rs. 500 crores is being given to the development of dairy industry in the country, I suggest that a sum of *Rs.* 500 crores should be allotted to the Khadi and Village Industries Commission so that 5 lakh job opportunities can be created within a short span of time.

The hon. Minister of Industry is blazing new trail by the setting up of District Industries Centres for the purpose of industrialising the rural areas in the country. I need not say that the necessity for such Industries Centres has arisen because of the inefficient and ineffective functioning of Khadi and Village Industries Commission. Before I conclude, I suggest that there should be close cooperation and coordination between the District Industries Centre and the Khadi and Village Industries Commission in the interest of meaningful and purposeful industrial development of rural areas of the country.

With these words, I conclude my speech.

श्री लक्ष्मी नारायण नायक (खजुराहो): सभापति महोदय, श्रभी उद्योग मंत्री, श्री जार्ज फर्नांडिस ने जो खादी तथा ग्रामोद्योग ग्रायोग (संशोधन) विधेयक यहां पर प्रस्तुत किया है उस पर मैं ग्रपने विचार प्रकट करना चाहता हूं। खादी हमारी ग्राजादी का बाना था ग्रौर जो उस समय खादी की परिभाषा की जाती थी उसका यही मतलब था कि जो हम गांवों में रहते हैं उन्हें, गांवों में ही जो चीजें पैदा होती हैं कपास, ऊन, वगैरह, वह हमें वहां प्राप्त हों ग्रौर वहीं लोग उसको मिलाकर वस्तुएं बनायें ताकि बाहर की चीजों के लिए हम मोहताज न रहें। इसके साथ ही हाथ से जो चीजें तैयार हों उसकी पूंजी का बटवारा भी सभी में हो। इसलिए मिलों में जो चीजें बनती थीं उसका विरोध किया गया था ग्रौर खादी को बड़ा महत्व दिया गया था। इस प्रकार ग्राजादी के समय खादी एक बाना था।

[श्री लक्ष्मी नारायण नायक]

साथ ही साथ आप देखें कि किसी दूकान पर हम अभी जाते हैं, किसी चीज को खरीदने के लिए तो कई बार मोल भाव करते हैं । हम कहते है कि इसकी कम कीमत देंगे लेकिन दूसरी तरफ आज एक प्रतिष्ठा बनी हुई है कि जब हम खादी की दूकान पर जाते हैं तो जितना दाम पडा होता है उतने मे हम चीज लेते है चाहे हमको खादी महंगी ही क्यों न पड़े । आज खादी पहले से महंगी भी है लेकिन हम सिद्धांत रूप में, विचार के रूप में, सादगी के रूप मे और स्वावलंबन की दृष्टि से कीमती खादी खरीदते है । इसलिए इसमें जो बात कही गई है उससे मैं भी सहमत नही हूं ।

इस विधेयक के उद्देश्य और कारणो मे कहा गया है कि प्राकृतिक फाइबर के अलावा खादी के कृत्रिम फाइबर का भी प्रयोग करना आवश्यक हो गया है । कृत्रिम का मतलब हम बनावटी समझते हैं यानी मिली हुई चीज, असली चीज नही । इसलिए मैं चाहता हूं कि आप कृत्रिम के स्थान पर शब्द नवीन फाइबर भी जोड देते । कृत्रिम शब्द को मैं उपयुक्त नही समझता हूं, इससे लगता है कोई नकली चीज या बनावटी चीज है । इसलिए इसमें जो चीज कही गई है उसके मैं फेवर मे नही हूं ।

दूसरी चीज यह है कि खादी जहां बिकती है वहां उसके साथ-साथ सरसो का तेल, चप्पलें आदि चीजें भी बिकती हैं । वहां पर आदमी इसलिए जाता है कि उसको सही चीज मिलेगी, कोई मिलावटी चीज नही होगी चाहे उसको भले ही कुछ अधिक कीमत क्यों न देनी पड़े । इसलिए आप अलग से किसी नये धागे की बात करें, कोई नया कपडा तैयार करना चाहें तो उस के लिए मेरा निवेदन है कि जो खादी की दूकानें हैं वहां पर वह चीज न बिके । यदि आप को इस काम को करना है, तो इसके लिए अलग से दुकान खोलें और वहां पर बेचें, तब हमें कोई विरोध नहीं है, लेकिन जहां पर खादी बिकती हैं, वहां पर इसे मत लाइये, अन्यथा लोगो के मन में खादी के प्रति जो श्रद्धा है, जो पवित्र भावना है, वह समाप्त हो जायेगी ।

हम पहले जो खादी पहना करते थे, वह काफ़ी सस्ती पडती थी, लेकिन अब जो खादी चली है, वह काफी महंगी हो गई है । हम यह चाहेंगे कि खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग इस चीज को देखे कि खादी के दाम क्यों बढ गये हैं, कहां पर कमी है, कहां हम ज्यादा खर्चा कर रहे हैं और ऐसा प्रयास किया जाय कि खादी सस्ती मिले । आज हमारे उद्योग मंत्री जी ने घोषणा की है कि हम गांवों की ओर जा रहे है, हमें गांवों में काम-धन्धे खोलने है, जिससे हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को काम दे सके, जो चीजें वहां तैयार हो, वह लोगों को सस्ती मिलें, सही मूल्यों पर मिले, लेकिन उन मे बनावटी चीजें नहीं होनी चाहिए, ताकि लोगों की भावना खादी के प्रति सही बनी रहे, उसकी पवित्रता कायम रहे।

खादी ज्यादा महंगी क्यो बिकने लगी है—इसके कुछ कारण हैं । बहुत से लोगों ने इस में घपला किया हुआ है, खादी व साबुन बनाने के लिए रुपया उधार लेकर उस काम में रुपया नही लगाया, बल्कि दूसरे कामों में वह पैसा लगा दिया । मैं चाहता हूं कि इस के बारे में जांच की जाय कि कहां-कहां पर किस-किस ने कितना रुपया लिया है, उस का किस तरह से उपयोग किया है, यदि उस काम में वह रुपया नहीं लगाया गया है तो क्यों नही लगाया गया है, वह रुपया वापस होना चाहिए था, क्यों वापस नही हुआ है । यदि हम इस चीज पर सख्ती से अमल करें, तो इस के अच्छे परिणाम निकलेंगे और लोगों के मन में खादी के

प्रति जो भावना है, वह ठीक बनी रहेगी, लेकिन इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस में बनावटी चीज न आये।

आज कल बुनकर लोगों को जो सूत दिया जाने लगा है, उस से लोगो को काम मिला है। देहातों में बुनकर बहुत अच्छी चादरें तथा शर्ट के कपड़े तैयार करने लगे हैं। लेकिन उनकी एक शिकायत है—जो रंगा हुआ सूत उन को दिया जाता है, उस में ब्लीचिंग पाउडर ज्यादा होता है, जिस की वजह से सूत कमजोर हो जाता है। उनका कहना है कि हमें बिना रंगा सूत दिया जाना चाहिए हम स्वयं उसको रंग लेंगे या किसी दूसरे से रंगवा लेंगे, इस से वह सूत उनको महंगा नहीं पडेगा, । मैं चाहता हूं कि उन की इस शिकायत पर विचार होना चाहिए।

इसी सन्दर्भ में मैं यह भी कहना चाहता हूं—जब मैं विधान सभा में था, तो जो भी विधेयक सदन मे पेश किया जाता था, उस पर पहले पार्टी की बैठक में विचार होता था और वहां हम अपने विचार प्रकट करते थे उस विधेयक को समझने की कोशिश करते थे। मैं चाहता हूं कि इस परम्परा का यहां भी पालन किया जाय, जिस विधेयक को पास कराना हो, उस पर पहले संसदीय दल की बैठक में विचार होना चाहिए ताकि वहां हम अपने विचार व्यक्त कर सकें।

अन्त में मैं यही निवेदन करना चाहता हूं—आप कृत्रिम धागे से जो भी कपड़ा बनायें, उस को अलग दुकानों पर बेचें, उसको इस में शामिल न करें, भले ही लोगों को खादी के लिए अधिक पैसा देना पडे। खादी की पवित्रता को समाप्त नहीं किया जाना चाहिए।

इन शब्दों के साथ मैं इस विधेयक का समर्थन करता हूं।

SHRI DINEN BHATTACHARYA (Serampore): Madam, I support this Bill because after four or five years they are implementing some of the recommendations of the Public Accounts Committee. But my apprehension is about the definition of the expression "khadi" as contained in the Act, because it may include "man-made fibre". If it includes man-made fibres, how can it be called "khadi"? Khadi is from cotton, silk or wool. How can a synthetic fibre be called a khadi product? So, my apprehension is, in the name of khadi, the big industrialists and monopolists, who manufacture rayon, will take advantage of this provision and will get some benefits from the Government on the ground that they are helping khadi production. So, there must be a clear definition as to what man-made fibre means. Otherwise, the big traders will take advantage of it.

It is proposed to invest the Commission with power to appoint persons with higher salaries. Till now they could appoint persons with a salary upto Rs. 500. Beyond that, they had to take the permission of the Government. Now they will be at liberty to appoint persons drawing a salary of more than Rs. 500 but there is no upper limit indicated. So, it should be clarified to what extent they will have the power to appoint.

There is much corruption in this organisation, and it has been discussed in this House many a time as to how the people who are forming the Khadi Commission are indulging in all sorts of corruptions.

Another point that I want to highlight is that there must be uniformity in cost—and selling price. The same article now sells at different prices in Calcutta, Bombay and Delhi. There is no uniformity throughout the coun-

[Shri Dinen Bhattacharya]

try, although it is one administraiton which is running the Commission. At least, so far as the price is concerned, there must be uniformity.

Why is there a tendency on the part of the employees of the Commission to be corrupted or to take to improper practices? It is because there are no proper service conditions. I have seen that by mere payment of a few coins, the widows who are spinning the yarn in the villages have been cheated. So, both from the point of the employees working in the Khadi showrooms and Khadi shops and those who are engaged in spinning yarn in the rural areas, their conditions of service should be made proper and decent.

At the same time, the prices of the Khadi products should be uniform, at least in the big cities, and a proper definition of man-made fibre must be made. Otherwise, it will be misused and advantage will be taken by the big monopolists who are now producing rayon etc. In the name of khadi they will sell their products in the market, as if they are helping khadi production.

With these words, I give my full support to the Bill.

श्री द्वारिकनाथ तिवारी (गोपालगंज): माननीय सभापति महोदया, खादी का प्रचार सन् 1920 से ज्यादा होने लगा। वैसे खादी हमारे देश में बहुत पुराने जमाने में भी बनती थी और इतनी उन्दा खादी बनती थी कि एक अंगूठी के बीच में से पूरी खादी का थान निकल जाता था। हिन्दुस्तान में चर्खे और करघे पर जो बढ़िया कपड़ा बनाया जाता था उससे इंग्लैंड के कपड़े के बाजार में मंदी आ गयी और जब वे लोग हिन्दुस्तान के कम्पीटीशन में नहीं आ सके तो उन्होंने यहां के कपड़े पर बेन लगा दिया। व केवल उन्होंने हिन्दुस्तान के कपड़े पर बेन लगाया बल्कि यहां के कपड़ा बनाने वालों के अंगूठे भी काट दिये। हिन्दुस्तान में बीच में खादी कम बनने लगी। लेकिन जब हिन्दुस्तान में स्वतंत्रता की लड़ाई गांधी जी के नेतृत्व में जोरों से चली तो स्वतंत्रता सेनानियों का बाना ही खादी हो गया। खादी स्वतंत्रता सेनानियों का बाना ही नहीं बल्कि देश के गरीबों की आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का एक कार्यक्रम बन गया। इससे गांवों में लोग दो-चार पैसे कमाते। जिन लोगों के पास मजदूरी का कोई साधन नहीं था, खादी उनकी आमदनी का जरिया बनी। यही नहीं गांधी जी ने यह भी सोचा कि खादी के बनाने और इस्तेमाल से हिन्दुस्तान स्वावलम्बी भी होगा और इससे गरीब के हाथों में कुछ पैसे भी आयेंगे।

उसके बाद से देश में बहुत से चर्खे बने। जिनको कुछ अनुदान देने की बात भी चली इसके फलस्वरूप देश में और भी अच्छे अच्छे चर्खे बनाये गये। लेकिन कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि जो सूत हाथ से कात कर निकलता है, उसके अतिरिक्त किसी और सूत का खादी में उपयोग किया जाए। वैसे तो आज भी कहीं कहीं—सेन्टरों में लोग गोलमाल करते हैं और दूसरा सूत मिला कर खादी का कपड़ा तैयार करते हैं। उसको भी खादी कहा जाता है। लेकिन जो खादी पहनने वाले हैं, वे खादी उसी जगह से लेते हैं जहां से कि उन्हें सर्टिफाइड खादी मिलती है। दूसरी जगह से खादी खरीद कर पहनना वे पसंद नहीं करते हैं और समझते हैं कि वे धर्म से च्युत हो जाएंगे। बेशक उन्हें खादी महंगी मिले लेकिन वे दूसरी जगह से खादी नहीं खरीदते। यही परम्परा चली आ रही है। लेकिन आज एक नयी बात हो रही है कि मेन मेड फाइबर की खादी बनायी जाए। मैं नहीं समझता हूं कि इसकी कोई जरूरत है। खादी से सुन्दर से सुन्दर और महीन से महीन कपड़ा बन सकता है। हाथ से निकाला हुआ सूत किसी भी मशीन से निकाले हुए

सूत से अधिक महीन होता है । मिल का सूत 80 काऊंट से ऊपर नहीं जाता जबकि हाथ से निकाला हुआ सूत तीन सौ काऊंट का भी होता है । हमारे यहां इतना महीन सूत बनता है कि उसके तीन धागों का जनेऊ बनाया जाता है । वह जनेऊ किसी भी मिल के जनेऊ से ज्यादा टिकाऊ होता और अधिक समय तक चलता है । जिस किस्म की खादी आप चाहें मिल सकती है । पैसे का खेल है । पैसा अधिक दो तो आपको अच्छी से अच्छी खादी मिल जाएगा । आपने जो मंतव्य दिया है उस में लिखा है :

"The Commission has recommended that in the context of the need to cater to the fast varying tastes and trends in the consumer market, a stage has come when induction of man-made fibres in khadi besides the natural fibres has become necessary."

किस लिए ? कौन सी चीज है जो खादी में नहीं मिलती है ? एक झूठा प्रयोजन ले कर आप इसे एमेंडमेंट को ले कर आए हैं । मैं नहीं समझता हूं कि यह उचित है । जार्ज साहब उस जमाने में नहीं थे 1920 और 1930 में । वह उस मुसीबत में से हो कर नहीं गुजरे हैं जिस मुसीबत में से हो कर हम गुजरे हैं । हम लोग जो पुराने कांग्रेसी कार्यकर्ता है कभी भी बरदाश्त नहीं कर सकते थे कि इस तरह की बात हो जो आप अब करने जा रहे हैं । मैं आपको बतलाना चाहता हूं कि 1920 में जब पूरी लंबी और चौड़ी खादी की धोती नहीं मिला करती थी तो दो जोड़ कर धोती हम पहना करते थे । इसको हम बरदास्त नहीं कर सकते थे कि मिल का सूत ला कर और बढ़ा कपड़ा हम लोग पहन लें । यह चीज हम लोगों को मंजूर नहीं थी । अब उससे आप हम लोगों को हटाना चाहते हैं । आपको क्या मिलेगा ? आज भी जो लोग मिलों का कपड़ा पहनते हैं और उसके पहनने के आदी हैं वे खादी भंडारों में जाते हैं और अपने टेस्ट के अनुसार कपड़ा खरीदते हैं । दूसरे सुधार जो आप करना चाहते हैं करें मुझे कोई एतराज नहीं है । उनके बारे में मुझे कुछ नहीं कहना । सचिव न बना कर मुख्य अभियन्ता आप बनाएं मुझे कोई आपत्ति नहीं है । लेकिन ऐसे कपड़े को आप खादी में शुमार न करें तो बेहतर होगा और देश की कोटि-कोटि जनता की भावनाओं के अनुसार होगा । मैं नहीं समझता हूं आपको इस रूप में इस बिल को लाना चाहिये था । मैं अपील करूंगा कि आप उस धारा को हटा दें जिस में मैनमेड फाइबर के इस्तेमाल की बात कही गई है । इसलिए मैं अपील करता हूं कि आप इसको हटा दें नहीं तो बहुत लोगों की भावनाओं को चोट लगेगी ।

SHRI T. A. PAI (Udipi): Mr. Chairman, after listening to all the speeches of my friends, I am sure, Mr. George Fernandes would be convinced that by changing the definition of khadi what he is doing or what he will be accused of doing is to adulterate a very important Gandhian concept. And I don't think when khadi is a matter of sentiments, is a matter of pride for this country—the idea that has been mooted is certainly one of increased employment and another is of improving the marketability. When Ambar Charkha was introduced, the Khadi Commission was discouraging people from supplying yarn made out of ordinary charkha and you would observe that for the last few years, the employment in khadi has been going down. Every innovation, every change has its own effect of development and if ever you are thinking of introducing a man-made fibre in this concept, as Mr. Nair has pointed out, then it is surely to kill the khadi industry without your meaning it. And therefore if the idea is to increase the employment, we may have to change the concept. I have been feeling that a time has come when this country should make up its mind to have a national clothing policy and

[Shri T. A. Pai]

not national textile policy. Very often, we have been confining our national textile policy to whether textile mills must be modernised or not or innovation must be brought about, but we have never thought of finding out whether people of this country should be ever clothed and how we are going to do it Now, take, for instance, immediately after the Second World War, the price of Binny Mill's long cloth was 8 annas per metre; now it is Rs. 8 per metre and still the Binny Mill is sick. That is the fate of the textile industry. On the other hand, if we ever want the people of this country to be clothed and if khadi has to provide increased employment—already seven lakhs of people are employed in khadi, but the outstanding stocks on hand every year are Rs. 35 to 40 thousand crores and in terms of interest you have paid on the balance of stock in trade it would come to another Rs. 4 or 5 crores—are we prepared to develop the concept of khadi being a part of our standard cloth programme? Why should not khadi and handloom make sarees or dhoties for people? And if at all we have got to subsidise, it is better we subsidise this year. Today khadi is made in villages and taken to cities for marketing, and the standard cloth is made in Ahmedabad and Bombay and brought to villages for marketing. This country never bothers about the total cost involved in this kind of process. Khadi is held on till October; all the patriots buy khadi only in the month of October when the heaviest subsidy is given. Who pays for the carry-over costs? It should not be that khadi is responsible for more people going naked and all the others wear it as a badge of patriotism. I think, the economics of this has to be gone into. Khadi has to expand, if khadi has to increase employment. Unless khadi is marketed in a big way, employment will come to a standstill.

16.00 hrs.

I would, therefore, like to say this. The functioning of the Khadi Commission has been a disaster all these years. Almost all the members are politicians who are finding a retired job there. As one having been in charge of this Ministry, I must confess that I could bring no changes. I wish my friend, Mr. George Fernandes, all good luck in changing the concept of the Khadi Commission first. Put there people who know the job, who can do the job and deliver the goods. Let it not be a retirement job for any politician as if it is a great service that is being done.

Today you are emphasizing on rural industries. You want the rural industries to expand. Khadi is an important rural industry. Marketing is an important concept here. The Khadi Commission was earmarked to look after 22 industries, but I am sorry to say that these 22 industries have not been brought up in this country. I think, this concept will have to go. Apart from these 22 industries, all the village industries that are capable of being run in cottages must come under its purview. The Khadi Commission's main function should be to provide the most efficient marketing organisation for the village industries. My friends were right in saying that the capacity that the multi-nationals have is not in production alone but in marketing also. If you want another organization to be built up to face competition and to market all the products under one single brand name also, it would be necessary that the Khadi Commission becomes the most important marketing organization and you develop it as a marketing organization quickly.

The very concept of standard cloth and the concept of marketing by the Khadi Commission brook no delay. If at all you are interested in translating all the policies which you are now saying—we had said about those policies in the past also, but we had not worried about implementing them—you should look into the implementation part; I would very much request the Minister to look into this aspect.

Regarding the change, if at all you want polyester also to be made in cottages, let it be one of the industries entrusted to the Khadi Commission. But, for that sake, do not change the concept or the definition of khadi. Leave it unadulterated. Let the Gandhian principles, some at least, remain unadulterated. When all of us have been talking of Gandhian ideals, let us not appropriate to ourselves the right to misappropriate the definitions and change them, adulterate them, and then find that we are neither here nor there.

कुमारी मणिबेन वल्लभभाई पटेल (मेहसाना) : सभापति महोदय, मैं इस बिल का विरोध करने के लिए खड़ी हुई हूं । सब से पहली बात तो यह है कि खादी का मतलब क्या है । गांधीजी ने जब खादी शुरू की, तो उसके पीछे भावना यह थी कि देहात में किसान के खेत में जो कपास होता है, उस को वे लोग अपने घर में बैठे बैठे कात सकें— उस के बिनौले निकालें, उस की पूनी बनायें और कातें । उस का नाम खादी है । आज भी देहात के लोग और जंगलों में आदिवासी उस को कातते हैं । उस में मैन-मेड फाइबर का कोई स्थान नहीं है ।

जब अंबर चर्खा शुरू हुआ था, तभी मैं ने कहा था कि अंबर चर्खे से लोगों को रोजी तो जरूर मिलेगी, लेकिन वह यर्वडा चक्र को खत्म कर देगा । पहले प्राइमरी स्कूलों में बच्चे यर्वडा चक्र कातते थे । इस प्रकार वे अपने हाथों और उंगलियों का उपयोग करना सीखते थे और उन में एकाग्रचित्तता आती थी । आज वह सब खत्म हो गया है । आप स्टेटिस्टिक्स निकालिये कि आज कितने अंबर चर्खे बेकार पड़े हैं, क्योंकि अंबर चर्खा चलाने के लिए यह जरूरी है कि उस को ठीक करने के लिए कोई टेकनीशन भी हो । अगर उस को कोई ठीक करने वाला न हो, तो बिगड़ जाने पर वह घर में पड़ा रहता है । इस के अलावा उस में कई संशोधन भी होते रहते हैं । पुराना अम्बर चर्खा गया है, नया आया है । लेकिन पुराने अंबर चर्खे को ठीक करने में बड़ी कठिनाई होती है ।

मुझे तो लगता है कि सरकार इस में मैन-मेड फाइबर ला कर खादी को खत्म कर देगी । मैन-मेड फाइबर को खादी न कहिये, उस को लोक-वस्त्र कहिये या उस को कोई और नाम दीजिए । लेकिन खादी भंडार में उस की बिक्री नहीं करनी चाहिए और खादी के साथ उसे बेचना नहीं चाहिए ।

मंत्री महोदय मुझे माफ करें, यह बिल उन के द्वारा लाया गया है, लेकिन मैं नहीं जानती हूं कि उन्होंने खादी का शास्त्र पढ़ा है या नहीं, गांधीजी ने खादी के बारे में जो कुछ लिखा है, उस को पढ़ा है या नहीं । अगर उन्होंने पढा हो, तो उन को पता चलेगा कि खादी की व्याख्या में मैन-मेड फाइबर नहीं आ सकता है । मुझे तो ऐसा भी कहा गया है कि मैन-मेड फाइबर से पसीना चूसता नहीं है । इस का मतलब है कि जब लोगों को पसीना आयेगा, तो उन्हें खुजली होगी । मंत्री महोदय को यह सब सोचना चाहिए ।

खादी मे इतनी प्रगति हुई है, उस में इतनी अच्छी चीजे बनती है कि कोई नहीं कह सकता है कि वह खादी है । एक भाई ने शिकायत की कि खादी महंगी है । वह क्यों न महंगी हो ? अगर कपास के दाम बढ़ाये जायेंगे, अगर खेत में काम करने वाले मजदूर को पांच रुपये रोज देने के लिए कहा जायेगा, तो क्या कपास पर उस का असर नहीं पड़ेगा ? और क्या कपास के बाद रूई पर उस का असर नहीं पड़ेगा ? अगर यह कहा जाये कि कातने वाले को इतनी रोजी देनी चाहिये, बुनकरों को इतनी रोजी देनी चाहिए, तो खादी का दाम बढ़ेगा ही । मैं तो हाथ से कातती हूं और पहनती हूं । मैं बाजार से कपड़ा नहीं लेती हूं । मुझे तो फर्क नहीं पडता है । लेकिन जो हाथ से कात कर नहीं पहनते है, उन्हें तो ज्यादा दाम देने ही पड़ेंगे ।

[कुमारी मणिबेन वल्लभभाई पटेल]

इस लिए मंत्री महोदय इस बिल के द्वारा खादी को खत्म न करें। मैन-मेड फाइबर को खादी में नहीं लाना चाहिए, खादी भंडार में बेचना नहीं चाहिए और खादी बोर्ड में उस का काम नहीं होना चाहिए। उस को लोक-वस्त्र कहें या कुछ और कहें, लेकिन उस का नाम खादी नहीं हो सकता है। आप गांधी जी का नाम लेते हैं। गांधीजी ने खादी शुरू की और आप खादी को खत्म करने का रास्ता निकाल रहे हैं, यह मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है।

मुझे हवाला दिया जाता है कि प्राइम मिनिस्टर ने यह कहा है। प्राइम मिनिस्टर ने कल ही कहा है कि सब को अपने अपने विचार रखने का अधिकार है। विचारों में फर्क हो सकता है। इस बारे में मेरे और उन के विचारों में फर्क हो सकता है। जिस का पालिएस्टर खादी पहनना हो, वह पहने। लेकिन उस को खादी के नाम से न बेचा जाये।

इस बिल के बारे में एमेंडमेंट आये हैं कि इस को पब्लिक ओपीनियन जानने के लिए सर्कुलेट किया जाये और इस का सिलेक्ट कमेटी में भेजा जाये। मंत्री महोदय का जो कुछ भी करना हो, वह करें, लेकिन मैन-मेड फाइबर को खादी में नहीं लाना चाहिए। इस बारे में और सोचें। इस की कोई जल्दी नहीं है। अगर यह अगले सेशन में आयेगा, तो कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है। इस लिए मेरी विनती है कि मेहरबानी कर के मैन-मेड फाइबर को खादी में मत लाइये।

PROF P G MAVALANKAR (Gandhinagar): Madam Chairman, I am grateful to you for calling me at this stage and I consider it a special privilege to be asked to speak following immediately after my esteemed colleague and elder Km Maniben Vallabhbhai Patel, all the more because her distinguished father and my father were closely associated, as the House knows, since 1913 until their deaths Some of us speak on this Bill, therefore, with a lot of emotion, a lot of sentiment and a lot of historical background I hope therefore, I have not to say separately I suppose, that I am standing before this House with all the sincerity and force at my command to oppose this Bill

SHRI A C GEORGE (Mukandapuram) Would you kindly find out whether the Prime Minister has seen the draft of this Bill?

PROF P G MAVALANKAR Well, I do not know

For once today I have found that my dear friend, Shri George Fernandes was on the weakest grounds He could not explain—and I do not blame him for that why this induction of man-made fibre into Khadi All that the Statement of Objects and Reasons does is to merely state that the Commission has recommended certain things and the Government has accepted those But why? If the Statement of Objects and Reasons does not explain anything about that, he should have explained to us in the House today Surely, he cannot take us for granted because the Government thinks like this, and, therefore, we must all accept it

As a matter of fact, it is also a further privilege that you should be in the chair Madam Chairman, Associated as you were with Gandhiji in a sense it is awkward for me to say this, because I would have liked you to be here with us in opposing this Bill

MR CHAIRMAN I am entirely with you

PROF. P G MAVALANKAR Thank you Why do I say this? This is a very innocent looking and apparently simple Bill Simple, of course, if it were merely to say that the existing maximum limit of members would be

seven; a Finance Member would be added; the Chief Executive Officer of the Commission would also be made Member-Secretary of the Commission and so on and so forth, although he did not tell us whether the Member-Secretary would be appointed by the Government first, or it would be selected by the Khadi Board and then consented to by the Government. But, this is a very minor point. There are certain other things like laying of the rules on the Table of the House—we agree to these provisions. But the major thing is that Khadi to us is something which stands as a symbol for a number of values for which we fought as youngmen before independence and for which we are even today fighting as citizens of the free democratic republic of ours.

Mahatma Gandhi—I do not have to tell this especially when you are in the chair; I feel very humble when I say this, but I must say that—brought Khadi not because he thought that it would be an additional fashionable thing for people to wear. Khadi and fashion do not go together; Khadi and character go together; Khadi and integrity go together; Khadi and sacrifice go together; Khadi and poor people go together; Khadi and fine character and neatness go together. But I am surprised that according to the recommendations of the Members of the Commission, Khadi and fashion are to go together. Because Khadi is not acceptable to many people as a fashionable commodity, therefore, somehow make it more fashionable and acceptable. I, therefore, want to ask, why have all this mix-up? For Mahatma Gandhi and the tall men and women of that generation, Khadi stood as a living symbol. As he said, it is a talisman for Daridra Narayan. When he used to spin on the wheel, Mahatma Gandhi used to say, "Every time I spin on the weel, I feel that I am identifying myself with the 'Daridra Narayan'." If that is the point, Khadi for us has a certain identification with the soil, has a certain identification with the values, a certain identification with the democratic temper of this soil and with certain spiritual values of this great motherland of ours. If that is so, why then pollute it by introducing this kind of a foreign element in it? If you want man-made fibre, have it, but do not mix it up with Khadi. Have it separately; we would all vote for it. We want people to have more jobs and we want industries to come up. But to mix it up with Khadi is to make nonsense of Khadi. Madam Chairman, I will not take more time because what is there to speak except to say that one is totally opposed to it both in letter and spirit?

Therefore, I say, Khadi and fashion cannot go together. The answer is obviously that Khadi itself is a fashion. Did Mahatma Gandhi not look very handsome and very beautiful in his Khadi loin cloth? He was the most handsome man, the most beautiful man one could ever see. After all, it is not the clothes that you put on, but it is the character that you exude, that makes the man and that makes the personality. Kalidasa said in Shakuntalam, talking about Shakuntala—I hope Vajpayeeji will relish it and I see he is relishing it—that after all what matters is not what kind of clothes Shakuntala wears. Even if it be a *valkala* that she wears, she will still look beautiful.

किमिवह्री मधुर।णाम् ।
म ड-,म् माकृतीनाम् ।।

That was the point. Therefore, you cannot say you put on Khadi and you must also look fashionable. If a man puts on Khadi with the spirit and the values which he has cherished, then I am sure that by the very nature of things he will look a beautiful man, a very handsome man and an upright man in public life.

Therefore, Madam Chairman, I say, why water it down like this? If you do not want Khadi, if you cannot wear Khadi, if it is not acceptable to the community and if it is not fashionable, then I can say that the more honest course will be to say, 'We will

[Prof. P. G. Mavalankar]

not have any more of Khadi'. I can understand that kind of argument. That will be more honest. But this kind of introducing a formal amendment and making it look an innocent thing will only mean cheating ourselves and cheating the spirit of Mahatma Gandhi. You and I did go last year to Mahatma Gandhi's Samadhi at Raj Ghat here in Delhi before we all came to this House to take our oaths .... (*Interruptions*) you and I and many others also went. Yesterday, the Prime Minister was talking about Mahatma Gandhi. I want to ask—would Mahatma Gandhi and all those who believed and fought for what Mahatmaji stood ever accept this kind of a dilution? Would they accept this kind of a foreign element being injected into the whole idea?

AN HON. MEMBER: It is sheer denegration.

PROF. P. G. MAVALANKAR: I would, therefore, say that it is worse than denegration. Once you allow the symbol of Khadi to be so inglorified and made nonsense of, the whole thing stands to pieces. Therefore, I feel that if Khadi is not liked by people, let us say honestly that we get rid of it, but don't have this kind of a combination. Such a mixture? Don't tamper with Khadi, because I feel as an individual who has grown with a certain tradition of independence-fighting and even fighting for independence and democracy after independence, I would say that people like us have certain values to respect, certain institutions to respect and certain sacred principles to respect. All those are violated, I am sorry to say, when my friend and my Janata Government for whom I have many good words to say, have brought this kind of legislation. Even at this late stage I request my friend, Shri George Fernandes and the government and the hon. Prime Minister to withdraw this Bill. If they do it, Gandhiji's soul will rest satisfied. If they do not do it, then, I am sure, they will at least have the courage to do the other thing. That is—let not this become a prestige issue, let it be a matter of free vote. Why should the Janata Party Members after saying all the things by way of opposition to this Bill be obliged to vote for the government? Why should, for example, Maniben Patel who is so opposed to it, be ultimately forced to vote with the government because of the three-line whip?....

SHRI D. N. TIWARY: Mr. Mavalankar, this is a matter of conscience.

PROF. P. G. MAVALANKAR: I am glad you say so. Therefore, I am saying and my final appeal is, that if the government cannot withdraw the Bill—it is not late, they can still do it—they can at least say that they will reconsider it and bring forward a modified Bill. But certainly they cannot tamper with Khadi like this. If not, I would say, let them have a free vote and I am quite sure that a large number of Janata Party friends of mine will vote down this Bill, because that is the only thing that we can do if we have any respect for Mahatma Gandhi.

With these words, I am sorry I am compelled to oppose this Bill which, I say, looks very innocent and simple but which is a very dangerous piece of legislation. It is playing with the fundamental values for which we have been standing and for which we shall continue to stand till the last breath in our life.

MR. CHAIRMAN: Before I call the next speaker, I wish to know what the wishes of the House are. Two hours have been allotted for this Bill. Out of that, just about 20—25 minutes are left and I have 14 names of speakers still on my list.

SHRI B. P. MANDAL (Madhepura): Let it continue.

SHRI D. N. TIWARY: It may be extended by an hour and a half.

SHRI VINAYAK PRASAD YADAV (Saharsa): Two hours.

MR. CHAIRMAN: So, is it the pleasure of the House that the time for this Bill be extended by two hours?

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

श्री बृज भूषण तिवारी (सलीलाबाद): सभापति महोदया, यह जो विधेयक लाया गया है, इस के सम्बन्ध मे कई तरह के विचार व्यक्त किये गये हैं जिन मे गाधी जी से सम्बन्धित को भावनात्मक पहलू है, उस पर सब से ज्यादा जोर दिया गया है । आज यह बात सही है कि खादी जितनी महगी होती गई है, उतनी ही गरीब जनता की पहुच से बाहर हो गई है । जिस समय खादी की शुरुआत हुई थी और जिस विचार या जिस दर्शन का सूत्रपात हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाधी ने किया था, उस का मकसद यह था कि हम इस को इतनी सस्ती बनाये कि यह आम जनता तक पहुंच सके, साथ ही साथ इस के उत्पादन में आम जनता का हिस्सा भी रहे। इस के पीछे यह भावना नही थी, यह कि खादी खरीद कर पहनी जाय, भावना यह भी कि खादी खुद कात कर या उस को बना कर पहना जाय । उस मे उपभोक्ता का स्वय का श्रम शामिल हो—यह इस के पीछे मूल भावना थी । यह वास्तव मे बहुत क्रातिकारी विचार था, इसी के पीछे पूरा राष्ट्रीय आन्दोलन चला, श्रम का महत्व और साथ-साथ हमारे देश की जो स्थिति थी कि हम कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दें—इन दोनों भावनाओं की पूर्ति होती थी । उस समय हमारे देश में जो औद्योगिक साम्राज्यवाद छाया हुआ था, जिस के हमारी अर्थ-व्यवस्था तहस-नहस हो रही थी, उस का मुकाबला करने के लिये गाधी जी खादी के विचार को लेकर जनता के सामने आये । आप को याद होगा—उस समय हमारे यहां विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई,स्वदेशी की भावना का प्रचार किया गया, लेकिन आजादी मिलने के बाद जब यहां राष्ट्रीय सरकार बनी, तो हम ने खादी का सरकारीकरण कर दिया । उस का यह परिणाम हुआ कि खादी सरकार द्वारा दी गई सब्सिडी पर जीवित रही। जितनी सब्सिडी हम ने दी, उस से खादी चली और उस में बड़े गंभीर भ्रष्टाचार, मैल-एडमिनिस्ट्रेशन हुए । जिस भावना से खादी को चलाया गया कि देश स्वावलम्बी बने, वह विचार मर गया और खादी स्वावलम्बी होने के बजाय सरकार बिलम्बी या सरकार पर आश्रित हो गई और सरकार ने पब्लिक का पैसा सब्सिडी के रूप मे दे कर उस को जीवित रखा ।

आज कि स्थिति मे सब्सिडी देकर ज्यादा दिन तक इस को चलाया नही जा सकता, इस सफेद हाथी को इस तरह से ज्यादा दिनों तक जिन्दा नही रख सकते है । इस लिये एक तरफ तो खादी के पुनर्गठन के बारे में यह बिल स्वागत योग्य है, लेकिन साथ ही साथ इस की व्यवस्था में भी आमूलचूल परिवर्तन और सुधार की आवश्यकता है । इसके साथ साथ कास्ट आफ प्रोडक्शन को कम करने की बात है । जो खादी आज राजपुरुषों और फैशनपरस्त लोगों के लिये हो गई है—इस तरह से हम खादी को ज्यादा दिन तक चला नही सकते है । मैं अपने मित्रों से यह निवेदन करूगा कि यदि खादी को विचार माना जाय तो उस विचार को निरन्तर बढ़ाने की आवश्यकता होगी, परन्तु ऐसी स्थिति मे उसको कहां तक आगे चला सकते है । यह ठीक है कि कोई समय था, जब हम ने इस बात पर आग्रह किया था कि हम को अपने हाथ से और हथकरघे से खादी बना कर पहनना है, लेकिन आज जबकि बिजली उपलब्ध है और देश में औद्योगिक प्रगति हो रही है, तो हम को छोटी मशीन, कम लागत की मशीनों का इस्तेमाल करना होगा, जिस से उत्पादन बढ़े और साथ-साथ उत्पादन की कीमत घटे और साथ ही यह सामान्य जनता तक पहुंच सके । इस को आप चाहे जो रूप दें, जो नाम दे, लेकिन इस के पीछे यदि यही मूल भावना है तो यह स्वागत योग्य है

[श्री ब्रज भूषण तिवारी]

परन्तु इस में यह खतरा जरूर है—यदि इस में पोलिएस्टर फाइबर मिला कर बनायेंगे और उस में बड़े-बड़े मिलवालें और कारखाने वाले भी शामिल रहेंगे तो फिर मैं यह समझता हूं कि कुछ लोगों के लिये जो खादी पूजा की वस्तु है, मंदिर की वस्तु है, वह पूजा की वस्तु न रह कर सड़क की खिचड़ी हो जायगी और इस तरह से धीरे धीरे खादी का नाश या खादी की मौत हो जायगी। अगर खादी के रूप को बचाना है और इस को आधुनिक बनाना है, तो मैं निवेदन करूगा कि सरकार को खादी का क्षेत्र भी सुरक्षित करना पड़ेगा कि कौन से कपड़े को खादी में बनाने का अधिकार होगा और उस के साथ साथ कौन से कपड़े को मिलों को बनाने का अधिकार होगा। मेरा सुझाव है कि मिलों द्वारा बाहर एक्सपोर्ट करने वाला कपड़ा बने और देश के अन्दर जिस कपड़े की खपत हो, उस कपड़े का उत्पादन हैन्डलूम या खादी के द्वारा हो। तब तो कुछ हो सकता है। अगर ऐसी बात नही है, तो फिर इस विधेयक का कोई मतलब नही होगा और जो हम पाना चाहते है, हासिल करना चाहते हैं और जो हमारा मकसद है, उस मकसद को हम नही पा सकेंगे। इस भावना को ले कर हमे इस विधेयक पर विचार करना चाहिए और हमें दुराग्रही नहीं होना चाहिए और भावना के आवेश में बह कर कोई ऐसा काम नही करना चाहिए। जो वास्तविकता है, जो यथार्थ हैं, उस से हमे मुहं नहीं मोड़ना चाहिए।

इस के साथ ही जो इस में सदस्यता बढ़ाने के और इस में वैयक्तिक आधिक सलाहकार के जो प्रावधान किये गये हैं, वे प्रावधान स्वागत-योग्य हैं। इस के साथ ही इस के गठन के बारे में और प्रशासन पर भी बहुत सख्ती बरतनी चाहिए क्योंकि बड़ा ही अपव्यय हुआ है और इस अपव्यय को हम ज्यादा दिनों तक बर्दाश्त नहीं कर पायेंगे। इस में बहुत सुधार की आवश्यकता है और सरकार ने जो कदम इस बारे में उठाए हैं, वे स्वागत-योग्य हैं।

SHRI A. C. GEORGE (Mukundapuram): At the outset, I would like to register my vehement protest against the way this Bill has been brought in this House. I have a feeling that the draft was prepared in a hurry and it has not gone through the scrutiny of the Cabinet, leave alone, the Prime Minister. I give the benefit of doubt to my namesake, Mr. George Fernandes, that he himself was not able to go through it earlier.

THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI GEORGE FERNANDES): It is not correct. The Bill was considered by the Cabinet. The entire proposal was considered by the Cabinet. It has come with the total concurrence and approval of the Cabinet. He has made a statement that the Bill has been brought without being properly thought of, without having the concurrence of the Cabinet and without the knowledge of the Prime Minister. All this three statements are totally inaccurate.

SHRI A. C. GEORGE: My main point is this that if marketing is to be done in Khadi—and he has said in the Statement of Objects and Reasons that we have to move with the modern times and fashions—it has to be done on the pattern of handloom marketing. In the matter of Weavers' Service Centres, about which I am sure the Minister is quite aware—it is part of his Department—these Weavers Service Centres and the Research Centres attached to them are making enough research and improvements in the handloom design and marketing. Why should Khadi be spoiled by the introduction of man-made fibres? The man-made fibre is defined as Rayon, Nylon and Polyster fibre. This will give opportunity for the mills who already are encroaching into the field of handlooms, who sometimes are making

secretive entry into Khadi also, to exploit the rebate that is given on Khadi sales. Once this yarn is allowed to be from this man-made fibre also, the mills will be finding it easier to take away the socalled rebate which is given especially during October.

So, this is one particular loophole which the industrialists may use. I request the hon. Minister, apart from everything else, that this provision for including the man-made fibre in the definition of the khadi has at least to be withdrawn if not the Bill itself is not to be reconsidered.

This is all I want to say.

श्री वी० पी० मंडल (मधेपुरा) : सभापति महोदया, मेरा यह कहना है कि मेरे माननीय मित्र श्री जार्ज फर्नांडिस साहब इसको रिलाइज करें कि अभी तक एक भी माननीय सदस्य ने इस बिल का समर्थन नहीं किया । अगर किया है तो पार्शल समर्थन किया है, टोटल समर्थन नहीं किया है । देखने में यह बिल सीधा-सादा मालूम होता है । लेकिन जब सारे हाउस की यह राय है तो मंत्री जी को रियेलाइज करना चाहिए कि इसमें क्या गलती है । उस गलती को वे इससे रिमूव करें ।

सभापति महोदया, पहले जो खादी का डफिनीशन था, उसको इस बिल में चेंज कर दिया गया है । मैं ओरिजिनल एक्ट से खादी का डेफिनीशन आपको पढ कर सुनाता हूं—

> "'Khadi' means any cloth woven on handloom in India from cotton, silk of woollen yarn hand-spun in India or from a mixture of any two or all of such yarns;"

इन्होंने इस बिल में जो खादी का डेफिनीशन दिया है—

> "(d) "Khadi" means any cloth/ woven on handlooms in India from cotton, silk, woollen or man-made yarn handspun in India or from a mixture of any two or all of such yarns;';"

सभापति महोदया, इन्हें अपनी डेफिनीशन में मेन मेड को क्लीयर करना चाहिए । अपने एम्स एंड ओबजेक्ट्स मे इसको क्लीयर किया जाना चाहिए कि इससे ये क्या अर्थ लेते है ।

Everything is man-made. We are God-made. Cotton is made by God. What is man-date? Perhaps, it is synthetic fibre which the hon. Minister wants to introduce.

Now, it is directly against what Gandhiji preached and what Gandhijiism stands for.

सभापति महोदया, गांधी जी का सोशलिज्म हमारे माडरन सोशलिज्म से अलग था । जहा माडरन सोशलिज्म कहता है कि अपनी वाट्स को बढाते जाओ, अपनी कम्फर्टस पर ज्यादा ध्यान दो, वहा गांधी जी ने कहा कि इस देश में हमें अपनी वांट्स को घटाना है । लोगों को सीधा-सादा जीवन व्यतीत करना है । उनका कहना था कि हमें कम से कम चीजो का उपयोग कर के आगे बढ़ना है और देश को आगे बढाना है । यही रास्ता उन्होंने देश के सामनें रखा था और कहा था कि इससे देश और देश में जनतंत्र आगे बढ़ सकता है ।

उस जमानें म जो सेन्टर में असेम्बली थी, उसके मेम्बरों की पोशाक कीमती होती थी । वे लोग कीमती पोशाक पहन कर असेम्बली में आते थे । गांधी जी ने हमें धोती-कुर्ता पहनना सिखाया और हम लोग इसी ड्रेस में सब जगह जाया करते थे । जो लोग देश में अच्छी ड्रेस पहनते थे, वे रेस्पेक्टेबिल माने जाते थे । लेकिन गांधी जी नें खुद मामूली से कपड़े पहन कर लोगो को अपने पीछे चलाया । उन्होंने स्वयं अपनी जरूरतों को कम किया और

[श्री बी० पी० मंडल]

लोगों को भी ऐसा करने का आह्वान किया। गांधी जी यह सब क्यों चाहते थे? महात्मा गांधी ने पहले विदेशी कपड़े का बहिष्कार किया। बाद में उन्होंने मिलों के कपड़े को भी प्रोत्साहन देना बन्द कर दिया। उनका कहना था कि इसे कैपिटलिस्ट्स को फायदा होता है। हमारे देश में जो गरीब वीवर हैं, जो गरीब जनता है उसको फायदा नहीं होता है इसलिए उन्होंने कताई पर जोर दिया था, स्वयं सूत कात कर कपड़ा बनवा कर पहनने पर जोर दिया था। मैंने देखा है कि हमारे मोरारजी भाई भी बराबर चर्खा चलाते हैं। महात्मा जी के रास्ते पर चलने वाले सभी लोग चर्खा भी चलाते हैं और इस मामले में स्वावलम्बी होते हैं, अपने पांव पर खड़े होते हैं कपड़े के मामले में।

आपने मैन मेड की डैफीनीशन नहीं दी है। जार्ज साहब ने इस में मैनमेड चर्ड घुसा दिया है। इसका मतलब यह है कि सिथेटिक फाइबर जो बनेगा वह भी खादी में घुसेड़ दिया जाएगा। मैं खादी 1930 से पहनता आ रहा हूं। लेकिन सिथेटिक फाइबर जो बनेगा वह तो मशीनरी और बड़ी बड़ी मशीनरी से ही बनेगा। सिथेटिक रबड़ मैंने देखा है। उसी तरह से सिथेटिक फाइबर भी मशीनों के जरिए से ही आएगा और इसका फायदा पूंजीपति वर्ग को मिलेगा। बड़े बड़े पूंजीपति तब इसको कैपचर कर लेंगे। जैसा माननीय सदस्यों ने कहा है उससे खादी एडल्ट्रेट होगा। गांधीज्म के साथ जो हम लोग पिछले तीस साल से सलूक करते आ रहे हैं और अब हम खादी को एडल्ट्रेट करेंगे तो I am afraid, Madam, this will be the last nail on the offin of Gandhism.

यह इन्नोसेंट बिल नहीं है। हमारे सीनियर मैम्बर श्री डी एन तिवारी जी को आपने अभी सुना ही है। बहन जी का संशोधन भी है। उन्होंने बड़ी सैक्रिफाइस की हैं देश के लिए। इन सब लोगों की फीलिंग्ज को एप्रिशिएट करते हुए मैं कहूंगा मंत्री जी को अगर वह इस बिल को विदड्रा नहीं भी करना चाहते हैं तो मेरा जो एमेंडमेंट है उसको मान लें। इस में मैंने इसको पब्लिक ओपिनियन जानने के लिए सर्कुलेट करने की बात कही थी। उनको यह भी चाहिए कि मैनमेड की डैफीनीशन वह कर दें। हाइड एंड सीक वाली बात हमारे साथ न करें।

What is man-made afterall? It should have been defined in the Bill. I am sorry you have not defined it.

डैमोक्रेसी का, प्रजातन्त्र का यह तकाजा है कि वह सदन की भावनाओं का आदर करें। उन्होंने कहा है कि कैबिनेट में वह इस बिल को ले गये थे। अन्दर की बात यहां कहना मैं उचित नहीं समझता। लेकिन किस तरह से आप खादी को एडल्ट्रेट करने जा रहे हैं इससे मैं समझता हूं कि अच्छा हो कि आप गांधी जी का नाम लेना ही छोड़ दें। उन्होंने सत्य, अहिंसा और खादी का मंत्र लोगों को दिया था। खादी बनाने का जो गांधी जी ने पाठ सिखाया अगर उसको आप इस तरह से एडल्ट्रेट करेंगे तो यह ठीक नहीं होगा। सदन में एक भी माननीय सदस्य आपको इस में स्पोर्ट नहीं कर रहा है। इसमें कांग्रेस की बात आती है। आपको चाहिए था कि आप इस चीज को पार्टी में लाते। अगर आपने ऐसा किया होता तो इस तरह की बात यहां हाउस में न होती। आप तो सोशलिस्ट हैं। प्रजातंत्र के बड़े पक्षपाती हैं। जब आप अंडरग्राउण्ड थे तो आपको जो बुलेटिन निकला करता था उससे हम को बहुत ईपीटस मिलता था और जब गलती से आपको कलकत्ता में पकड़ लिया

गया तो हमें बहुत अफसोस और दुख हुआ। डैमोक्रेसी के लिए आपके दिल में बहुत दर्द है इसको हम जानते हैं। अगर इसको आप अभी विदड्रा नहीं भी करना चाहते हैं तो मेरे तथा दूसरे माननीय सदस्यों ने जो संशोधन दिए है कि इसको पब्लिक ओपिनियन जानने के लिए प्रचारित किया जाए उसको आप मान लें। इससे आपकी इज्जत भी रह जाएगी, प्रतिष्ठा भी बच जाएगी और हम समझेंगे कि हमारी बात को भी आपने आदर की दृष्टि से देखा है और मान लिया है। आप मौका किसी को न दें कोई एक्सट्रीम स्टेप उठाने का। उत्तर प्रदेश में आज जो रिजल्ट आए हैं उनको भी आप सामने रखें। हम लोगों का और भी मजबूत होना चाहिए। जनता पार्टी आज भी मजबूत है। इन लोगों को आपको कोई गलत अभी मौका नहीं देना चाहिए। इसलिए मैं ऐडवाइस करूंगा कि इसको आप जनमत जानने के लिए तुरन्त भेज दीजिए। तब तक पार्टी में भी डिस्कस कीजिये। और यह बिल इतना इन्नोसेंट नहीं है। मैन मेड को आपने डिफाइन नहीं किया। जब जनमत के लिए भेजेंगे तो अखबारों और अपने मीडिया के जरिए लोगों के विचार मालूम होंगे। व्हाट इज मैन मेड, कैसे खादी ऐडल्टरेट नहीं होगी, इन सब बातों को आप समझाइये, और ऐसा कोई काम न करवाइये जिसमें हमें शक हो। इसीलिए मैं उम्मीद करता हूं कि मंत्री महोदय हमारे सुझाव को मान लेंगे और इस बिल पर दोनों तरफ के सदस्यों की राय को देखते हुए वे इसको पुश थ्रू करने का काम नहीं करेंगे। इतना ही कह कर मैं बैठना चाहता हूं।

SHRI P. VENKATASUBBAIAH (Nandyal): Madam Chairman, it is most appropriate that you should be presiding over this House when this important Bill is being discussed. Madam Chairman, Bapuji would turn in his grave when the name of khadi is being polluted and dilluted as is being done now. I have come to know another revealing factor that when Mr. A. C. George said that the Cabinet might not be aware of it, nor Mr. George Fernandes, Mr. Fernandes got up and contradicted that. Now, I have come to the conclusion that there is a variation in the Janata Party's percept and performance. Yesterday, the Prime Minister was telling this House that Gandhian economics had stood the test of time. Even the western economists have also come to accept the Gandhian economics. In this context, I may state that there has been a near unanimity in this House with regard to the definition of khadi and inclusion of man-made fibre in the definition of khadi. Madam, we have seen previously that many such attempts to do away with this sacred concept which is associated with our freedom struggle. It is not only a political concept, but it is an economic concept also. At one time, I remember, when Shri T. Prakasam, the then Chief Minister of composite Madras State, had said that the textile mills should not get expanded and there should be khadi production, the mill owners, mill industry magnats and giant monopolists saw to it that Shri Prakasham was dethroned. I would not be surprised if surreptitiously some hand was behind this and perhaps my friend might not be aware of all these things.

Next to agriculture, handloom and khadi industry occupies the important position. It is a labour intensive industry. Millions and millions of our countrymen are engaged in this noble profession. I remember 40 or 50 years back, even in the moon-lit nights, the women-folk used to ply 'charka' and the music of the charka was heard everywhere in the villages. Gandhiji knew the spirit of the whole economy. That is why he said "through charka we will bring Purna Swaraj". It is not only a political concept but it is an economic concept also. Many people down from the kisan to the person who separates cotton from the seeds, the weavers are engaged in this noble task.

[Shri P. Venkatasubbaiah]

I may tell the hon. Members for their information that in my own State, there are people, especially the Harijans, who use to spin 100 or 110 counts threads and the weavers of khadi in my area are the Harijans, not the people belonging to other communities. This community is purely engaged in weaving of khadi.

Now, speaking about the economics, I would say that even from the point of economics, it is not costly. We have been subsidising several crores of rupees for such things which are unproductive. But here is an industry where millions of our people are involved. They get employment and they can supplement their income by spinning and weaving. Mr. Fernandes said that there was an erroneous impression that khadi was not good and if it is not spurious, khadi is strong, conception. If woven and spun well, if it is not spurious, khadi is strong. It is the strongest cloth that anyone could come across. It is durable. During summer khadi will be air condtioner. If you wear terrylene or such cloth your body will become hot. I do not know why such false information is given to discredit khadi. Khadi is economically viable and there is sentimentality about it. Gandhiji had said:

> "I object to the term vegetable ghee because it is not ghee, it should be labelled as vegetable oil. Similarly I cannot tolerate that cloth which is not khadi, which is not hand-spun and hand woven, should pass as such."

He is categorical and emphatic. If you want to circumvent it and give a wrong definition that is another thing but this is what Gandhiji preached. I think we are deceiving ourselves and deceiving other people when we say that we are following Gandhian ideals. Especially the Janata government, since they came to power, they say that they stand for Gandhiji's ideals and Gandhian economics. I do not know what they are going to do. It is just a repudiation of what they said the other day.

THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI GEORGE FERNANDES): Please repeat that quote.

SHRI P. VENKATASUBBAIAH: This is what he said:

> "I cannot toleate that cloth which is not khadi, which is not hand-spun and hand-woven, should pass as such."

He wants to say that this fibre is also hand-woven, I could get your point. But it is not this fibre, this fibre is man made and imported, it is not natural fibre.

SHRI GEORGE FERNANDES: I was only on the limited point of hand-spun and hand-woven.

SHRI P. VENKATASUBRAIAH: Coming to the economics, the marketing part of khadi, Rajaji said long time back that there should be clear demarcation between mills and handlooms. Handlooms should be exclusively for the manufacture of sarees and dhoties. We can devise such a method to see that khadi survives in this country, profitably. Somebody said that khadi which is sold now is not fashionable and does not pander to the tastes of people. If one goes to Khadi Bhandar in Delhi, there is a bee-line; many foreigners come there and they purrchase things. Attempts should be made towards research and development, instead of merely saying that khadi does not suit the changing tastes of peoples. If there is no such department, let a research and development department be constituted in the Khadi and Village Industries Commission and let it evolve such designs

and colours which would attract a large number of people. I am sure the hon. Minister will bow to the unanimous wish of this House and withdraw this Bill.

My friend Sougata Roy was pointing out how money had been squandered in the name of workers' institutions and how khadi boards in the states have played havoc. I know what has been done in my state. The name of khadi had been put in mud. People who are in charge of Khadi Board have pilfered and squandered money and the Public Accounts Committee of the Third Lok Sabha had clearly brought out the working of Khadi Commission. I should like him to streamline and restructure the whole thing and make it more commercial and more efficient. They must not dump unwanted and forgotten politicians on Khadi Commission, that was being done and that is why we are reaping the consequence.

Therefore, I would suggest that the marketing section should be strengthened and the Research and Development section should also be strengthened. There should be more propagation for purchase of khadi. Khadi is not costly and I may submit to the hon. Minister that he should change his notion or his conception of khadi and respect the wishes of this hon. House and withdraw this Bill.

Coming to the financial control of the Khadi Commission, I would suggest that there should be decentralisation. Let each region be put in exclusive charge with regard to financial management so that they may have accountability in this matter and let the Khadi Commission be further strengthened because it does not look after Khadi alone and there are various industries like Cottage and Village industries, which are giving employment to thousands of people.

With these words, I again oppose this Bill and I would request the hon Minister to withdraw this Bill.

श्री हुकम देव नारायण यादव (मधुबनी): सभापति महोदय, मैं इस विधेयक का आर्थिक, सामाजिक, भौतिक, आध्यात्मिक, सैद्धान्तिक और व्यावहारिक सभी दृष्टिकोणों से विरोध करता हूं। मैं जिस क्षेत्र का रहने वाला हूं, मधुबनी, वह न केवल हिन्दुस्तान में बल्कि विश्व में खादी उत्पादन के लिए प्रसिद्ध रहा है। जहां एक लाख परिवार का जीवन केवल इस खादी पर ही आधारित था। आज तो खादी कमीशन, खादी बोर्ड और सरकार की गलत नीति के कारण एक लाख परिवार में से लगभग 50-60 हजार परिवार भुखमरी का शिकार हो रहा है क्योंकि उन की जीविका और जीवन बिलकुल खादी पर ही आश्रित था। दूसरा एक सब से बड़ा सामाजिक कारण वहां था कि जो पुरानी विचारधारा के ब्राह्मण है उन की आबादी वहां ज्यादा है, उन के यहां जो विधवाएं हो जाती है, जो दूसरी शादी नहीं करती, ऐसी हजारों विधवाओं का जीवन इस इलाके में इसी खादी पर ही आश्रित था और खादी की व्यवस्था में गडबडी आने के कारण वह हजारों विधवाएं भूख की शिकार हो रही है। उन के सामने कोई और रोजी रोजगार नहीं है।

अब प्रश्न यह आता है, खादी के सम्बन्ध में स्वयं महात्मा गांधी जी ने क्या कहा था यह देखिए। मैं अंग्रेजी उतना जानने वाला नहीं हूं लेकिन अंग्रेजी की किताब में से थोड़ा पढ कर सुनाना चाहता हूं। गांधी जी ने एकोनामिक्स आफ खादी लिखा था वह हरिजन में 2-11-35 को पृष्ठ संख्या 300 पर प्रकाशित हुआ था:

"The science of Khadi requires decentralisation of production and consumption. Consumption should take place as nearly as possible where Khadi is produced."

[श्री हुकम देव नारायण यादव]

इस के माने लगाइये कि मैन-मेड फाइवर इस में आता है या नहीं, गांधी जी की इस परिभाषा में यह आता है या नहीं ?

"The Central fact of Khaddar is to make every village self-supporting for its food and clothing.'

इस परिभाषा में मैन-मेड फाइवर को कसिये । वह उन्होंने पढ़ दिया कि चरखा पर काता जायगा और करघा पर बुना जायगा तो जार्ज साहब को लगा कि चूंकि चरखा पर काता जायगा और करघा पर बुना जायगा तो खादी में आ जायगा, लेकिन गांधी जी की खादी की परिभाषा को सुनिए :

"Self-sufficient Khadi will never succeed without cotton being grown by spinners themselves or practically in every village. It means decentralisation of cotton cultivation so far at least as self-sufficient Khadi is concerned."

उन का कहना था कि कपास का उत्पादन अपनी वारी में, झाड़ी में और अपने खेतों में, गांवों में हो और वहीं से उत्पादन कर के उस के जरिए सूत तैयार कर के खादी बनाओ । मैन-मेड फाइवर गाव में रहने वाला अपनी वारी में, अपने खेत में, अपनी जमीन में कैसे पैदा करेगा ? अमेरिका और इंग्लैंड से, विदेशों में फाइवर मंगा कर और हिन्दुस्तान में चरखा पर कतवा कर कहिएगा कि यह खादी पोलिस्टर है, खादी पोलिस्टर जब इस तरह बनेगा तो छोटे उद्योग में इसी तरह खादी लिपिस्टिक, खादी पाउडर, खादी टेरिलिन, खादी टेरिकाट और खादी ड्रेन पाइप सूट भी तैयार हो जायगा । सब का नाम खादी है । और जब घर घर में शराब बनने लगे तो उसको भी खादी शराब का नाम दे दीजिए । चूंकि वह घर में तैयार हो रही है इसलिए शराब भी खादी है । इसलिए मैं निवेदन करूंगा कि महात्मा गांधी ने जो कहा था उसके आधार पर इन बातों को देखना चाहिए । आप खादी भण्डार में व्यवस्था खर्च बढ़ा रहे हैं, ऊंचे दाम देकर, ऊंची तनख्वाह देकर नौकरों की बहाली करना चाहते हैं तो खादी भण्डार में जो काम करने वाले थे वे वहां पर नौकरी नही करते थे बल्कि सेवाभाव से वे वहां पर काम करते थे । एक सेवक की भावना से वे वहां पर काम करते थे । खादी ग्रामोद्योग कमीशन के अन्तर्गत हमारे बिहार में खादी ग्रामोद्योग संघ है, वहां पर स्वर्गीय लक्ष्मी नारायण साहू जी ने खादी संस्था में एक व्यवस्था चलाई थी कि चपरासी से लेकर मैनेजर तक सभी को सौ रुपया महीना मिलता था । साहू जी ने लक्ष्मीपुरी में इस प्रकार की व्यवस्था चला कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया था कि नाम के लिए चपरासी और मैनेजर लेकिन उनका वेतन बराबर था । काम करने के लिए सुविधायें थोड़ी ज्यादा मिल जाती थीं ।

गांधी जी ने खादी के बारे में लिखा था :

"Organisation of khaddar is infinitely better than cooperative societies or any other form of village organisation. It is fraught with the highest political consequence because it removes the greatest immoral temptation from Britain's way".

पश्चिमी देशों में लोगों की जो प्रवृत्ति थी, महात्मा गांधी चाहते थे कि हिन्दुस्तान की इस खादी संस्था में लोगों की वह प्रवृत्ति न हो बल्कि सेवाभाव हो । उन्होंने लिखा था :

"If, therefore, his one great temptation is removed from Britain's path by India's voluntary effort, it will be good for India"

उन्होंने कहा था कि खादी भण्डार मे, खादी सस्था मे सेवाभाव से काम होना चाहिए। वहा पर सेवा के लिए किसी कीमत की बात नही है, ऊची तनख्वाह की बात नही है। खादी सस्था मे जब फैशन के आधार पर काम चलने लगा, जब वहा पर भी आराम-तलबी के आधार पर काम चलने लगा तो वहा के लोग भी सोचने लगे कि आराम की जिन्दगी बिताओ। लेकिन खादी का जो विचार है उस विचार को मार डाला। आज इस विधेयक के जरिए महात्मा गाधी के खादी के सम्बन्ध मे जो विचार थे उस पर घोर प्रहार है। इस विधेयक का सपोर्ट करने से तो आत्महत्या करना ज्यादा अच्छा होगा।

महात्मा गाधी ने आर्गेनाईजेशन के बारे मे जो लिखा है उस की दो चार लाइने पढ कर मैं समाप्त करूगा। उन्होंने लिखा है

"If we want to give these people a sense of freedom, we shall have to provide them with work which they can easily do in their desolate home and which would give them least the barest living This can only be done by the spinning wheel"

महात्मा गाधी के आर्गेनाईजेशन के सम्बन्ध से जो विचार है उनका जरा गहराई के साथ पढना होगा और विचार करना होगा।

16.57 hrs.

[SHRI DHIRENDRANATH BASU *in the Chair*]

आखिर मे मैं कहूगा कि महात्मा गाधी ने खादी का सम्बन्ध केवल भौतिकता से नही रखा, महात्मा गाधी ने खादी का सम्बन्ध केवल आध्यात्मिकता मे नही रखा बल्कि उन्होंने खादी का सम्बन्ध आध्यात्मिकता और भौतिकता दोनों से रखा है। चर्खा आध्यात्मिकता और भौतिकता दोनो का समिश्रण है। चर्खे को आप केवल भौतिक आधार पर नही नाप सकते है। महात्मा गाधी ने 'यग इडिया' मे 5-5-1927 को उसके पृष्ठ 142 पर आध्यात्मिकता के बारे मे लिखा है, इसको हमारे जार्ज साहब जरा गहराई और ध्यान से देखे। महात्मा गाधी ने लिखा है .

"Before the educated classes I do not place the economic aspect of the spinning wheel I simply want them to realise the spiritual aspect of the thing. By spinning and wearing khadi alone they will express their sympathy for the poor. But for the poor, the economic is the spiritual You cannot make any other appeal to those starving millions"

इस तरह से महात्मा गाधी ने खादी के साथ आध्यात्मिकता का सम्बन्ध रखा।

17.00 hrs.

जर्मनी के महान समाजवादी नेता 'सुमाखर' ने जर्मनी की ससद् मे अपना भाषण देते हुए कहा था —"हिन्दुस्तान मे एक आदमी है, जिसने ईश्वर को देखा है तो गरीबो की रोटी मे देखा है और वह आदमी है—महात्मा गाधी।" महात्मा गाधी के बारे मे पश्चिमी देशो के समाजवादी नेताओ की यह मान्यता रही है कि महात्मा गाधी का यदि कोई ईश्वर है तो वह नपुसक ईश्वर नही है, महात्मा गाधी का ईश्वर कोई दूसरा ईश्वर नही है, मन्दिर का ईश्वर नही है, उस ने करोडो गरीबो की रोटी मे उस ईश्वर को देखा है, उन की आत्मा मे उस ईश्वर को देखा है। महात्मा गाधी ने भौतिकता और आध्यात्मिकता का सम्मिश्रण किया था।

इस लिए मै निवेदन करूगा कि इस विधेयक को सरकार वापस ले ले या मैंने जो

[श्री हुकम देव नारायण यादव]

संशोधन दिया है कि जनमत जानने के लिए इस को प्रचारित किया जाय—उसे स्वीकार कर ले ताकि जो सही बात है वह सामने आ जाय। जय प्रकाश जी, आचार्य कृपलानी जी, और जो बड़े-बड़े लोग हैं, जो खादी में विश्वास करने वाले लोग हैं, उन की मान्यताओं और विचारों की इज्जत की जानी चाहिए, न कि सरकार यह मानकर चले कि जो सरकार सोचती है, वह सही है, दूसरे जो सोचने वाले हैं, वे मूर्ख है। इस विचारधारा से काम चलने वाला नही है। इसलिए सरकार को इस पर गहराई से विचार करना चाहिए, इस को थोडे दिनों के लिए वापस लेकर इस पर विचार स्थगित रखना चाहिए और पूरे विचार-विमर्श के बाद इस बिल को यहा लाये, क्योंकि खादी गांधी जी से जुडी हुई है, हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता से जुडी हुई है, मेरे जैसे हजारों लोगों की जिन्दगी से जुड़ी हुई है, हमारी भावना आध्यात्मिकता और भौतिकता से जुडी हुई है—इसलिए मै इस बिल का विरोध करता हूं।

डा० सुशीला नायर (झांसी) : सभापति महोदय, मैं बहुत दुखी मन से यहां इस बिल का विरोध करने को खडी हुई हूं। मेरी समझ में नहीं आ रहा आजादी के इतने दिनों बाद, आजादी की लड़ाई लडने वाले हमारे गांधीवादी नेता श्री मोरारजी देसाई की सरकार किस तरह से हमारे सामने इस किस्म का विधेयक लेकर आई है। वे उन सब बातों को भूल गये कि खादी किस सन्दर्भ में पैदा हुई, किस सन्दर्भ में खादी को नेहरू जी ने "लिबरी आफ फ्रीडम" कहा था। खादी का मूल्य उद्देश्य क्या था? हर हैण्ड वोवन और हैण्ड स्पन कपड़ा खादी है यह कह कर हमारे भाई जार्ज और उनकी सरकार "लैटर-आफ-वाउ-आफ-खादी" को रखना चाहते हैं, लेकिन उस की स्प्रिट को खत्म कर देना चाहते हैं। हैण्ड-वोवन और हैण्ड-स्पन के पीछे भावना क्या थी? इस के पीछे स्वावलम्बन की भावना और ग्राम-स्वराज्य की भावना थी। बापू ने कहा था—एक बार नही, अनेक बार, आप उन के लेखों को देख लीजिए—गांव का आदमी अपना अन्न पैदा करता है, अपना कपास पैदा करता है, उस कपास का सूत निकाल कर अपने लिये कपड़ा भी पैदा कर लेता है, इस तरह से खाना और वस्त्र जो जीवन की मौलिक आवश्यकताये हैं, उन के बारे में वह स्वतन्त्र हो जाता है। इस लिये खादी में इस तरह के पोलिएस्टर मिलाकर, मैन-मेड-फाइबर मिला कर और यह कहकर कि वह हैण्ड-स्पन और हैण्ड-वोवन खादी होगी, आप अपने आप को धोखा दे रहे है, खादी जगत को धोखा दे रहे है। मुझे आश्चर्य होता है—खादी कमीशन के लोगो ने किस प्रकार इस सुझाव को सरकार के सामने रखा और सरकार ने उसे स्वीकार कर लिया।

जैसा पहले भी कहा गया है—खादी का अर्थ क्या है, खादी किस लिये महत्व रखती है? बापू ने हमेशा कहा था—खादी शोषण मुक्त समाज का प्रतीक है। क्यों मिलों का विरोध किया, बापू ने, और खादी का समर्थन किया। बहुत लोगों ने कहा था उनसे कि बापूजी, विदेशियों के सामने खादी की आवश्यकता थी, अब तो देश आजाद हो गया है, अपनी मिलें हैं, अब खादी की क्या जरूरत है? बापू ने कहा कि खादी की जरूरत है क्योंकि खादी में जो कपास पैदा करता है, जो चरखा कातता है, जो सूत बुन कर खादी तैयार करता है, जो खादी भण्डार में खादी की बिक्री करता है, उन की कमाई में कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं होता जैसे कि मिल के मैनेजर और मिल का जो मजदूर है उन में होता है।

श्रीमन्, मैं यह कहना चाहती हूं कि सब से पहले खादी की आत्मा पर कुठाराघात

किया गया जब बडी बडी तन्खाहें कायम की गई खादी कमीशन और बोर्ड के बड़े बडे नेताओ के लिए और उन बडी तन्खाहों के कारण ही वे आश्रय बन गये चुनाव मे हारे हुए लोगो और दूसरे और लोगो को रखने के लिए और राजनैतिक लोगो को वहा पर रखा गया, बजाए उन के जो खादी की साइंस खादी की विद्या और खादी के विज्ञान को पूरी तरह से समझने वाले लोग थे।

आज सोमभाई जैसे लोग खादी कमीशन मे बैठे है जो खादी मे बरसो बरस से काम कर रहे है। सोमभाई ने यह सिफारिश कैसे की कि खादी मे पोलियस्टर मिलाया जाय। मुझे आश्चर्य होता है और मुझे बहुत दुख भी होता है। शोषणमुक्त समाज की परिभाषा मे बापू ने खादी हमारे सामने रखी थी। अब पोलियस्टर कौन बनायेगा? वहा कारखाने क्या गरीब आदमी चलाएगा? पोलियस्टर के कारखाने को चलाने वाला कोई बडा मिल मालिक ही होगा। वहा पर कारखाने मे जो काम करने वाला मैनेजर और बडा वैज्ञानिक होगा उन मे और खादी के बुनकर की पगार मे कितने बडे फर्क की आप अपेक्षा रखते है और उस फर्क को देख कर क्या आप कह सकेंगे कि यह खादी शोषणमुक्त समाज का प्रतीक है? हरगिज नही जैसा हमारे भाई मावलकर ने कहा था खादी फैशन के साथ नही जाती है। सुन्दर हो खादी, अच्छे प्रिंट्स हो, अच्छी तरह से वह बनी हुई हो, उससे कोई इन्कार नही करता। बडी खुशी से आप सुन्दर खादी बनाइए लेकिन क्योकि खादी को जब आप धो कर सुखाते हैं तो वह उस तरह से क्रिप ड्राई नही होती जैसे कि आप की टैरेलीन की कमीज क्रिप ड्राई हो जाती है और उस पर आपको इस्त्री नही करनी पडती। उस तकलीफ को खत्म करने के लिए आप सोचते हैं कि पोलियस्टर उस मे डालना चाहिए। लेकिन मैं भाई जार्ज फर्नान्डीस की सेवा मे यह निवेदन करना चाहती हूं कि आगा खान पैलेस के जलखाने मे मैंने बहुत खादी के कपडो को धोया है। मैं अपने कपडो को धोती थी, कस्तूरबा जी के कपडो को धोती थी और बापूजी के कपडे मैं धोती थी और उन के जो मालिश वगैरह होती थी उस बिस्तर की चद्दर को भी मैं धोती थी और धोते धोते मैं थक जाती थी। उस समय इस्त्री करने का तो सवाल ही पैदा नही होता था। थोडा थोडा भीगा कपडा जब रहता था तो उस को अच्छी तरह से बिछा कर हाथ से साफ कर के तकिये के नीचे जब वह रख दिया जाता था तो उस पर इस्त्री सी हो जाती थी। इस तरह से हम ने बरसो बरस खादी पहनी है, किसी दूसरे तरीके से नही। आज भी हम कपडे धो कर तकिये के नीचे रख सकते है, इस्त्री की तकलीफ रफा हो जाएगी। फिर वे कहते है कि पतलून की क्रीज बराबर नही रहती है खादी मे। मैं नही जानती कि पोलियस्टर के बगैर डबल टुइस्ट सूत से खादी बनाई जा सकती है या नही या उसमे कुछ थोडा सा टसर मिलाया जा सकता है, हमारे खेतो मे जो सनाय पैदा होता है, वह कुछ मात्रा मे मिलाया जा सकता है जिससे कि पतलून के कपडे मे कुछ कडापन आ जाए और उसकी क्रीज ठीक रह सके। सिर्फ आप इसलिए पोलिएस्टर को लाये कि पतलून की क्रीज ठीक रहे तो यह तो खादी को समाप्त करना है। अगर आप खादी को समाप्त करना चाहते हैं तो सीधी तरह कर दीजिए। मैं नही समझती कि आप पोलिएस्टर वाले कपडे को खादी नाम ही क्यो देना चाहते है? उसका आप दूसरा नाम रख दीजिए। लोक वस्त्र उसका नाम रख सकते हैं। यह जरूरी नही कि उसका नाम खादी ही रखा जाए। हैण्डलूम पर आर्ट सिल्क की साडिया बन रही है। क्या जरूरी है कि पोलिएस्टर को खादी को जोडा जाए। क्या सिर्फ यह कहने के लिए आप खादी से पोलिएस्टर को जोडना चाहते हैं कि खादी की आपकी इतनी चिक्की हुई है? अरे भाई, हैण्डलूम के लिए भी तो चिक्की का सवाल उठता है। हैण्डलूम से भी लोगो को

[डा० सुशीला नायर]

काम मिलता है खादी की अधिक बिक्री के लिए उसमे पोलिएस्टर मिलाने से कोई फायदा नही है। मैं आप से कहती हूं कि आप खादी की स्प्रिट को खत्म न कीजिए। खादी जो एक शोषण मुक्त समाज का प्रतीक बन गयी है उसको शुद्ध खादी ही रहने दीजिए। खादी को स्वावलम्बन और ग्राम स्वराज्य का प्रतीक बना कर आगे बढाइये। पोलियेस्टर हैण्डलूम मे मिलाइये अगर मिलाना है तो। खादी मे नही।

आज गाधियन विचारधारा की तरफ दुनिया देख रही है। गाधी जी ने एंट-मोस्फियरिक पोल्युशन के बारे मे कहा है, उसके लिए भी दुनिया गाधीयन विचारधारा की तरफ आ रही है। गाधी जी ने एक छोटी कम्युनिटी के महत्व के बारे मे भी कहा था ऐसी कम्युनिटी जिसमे हर एक एक दूसरे को जानता हो। बडे शहर मे अक्सर हमे अपने पडोसी का नाम भी मालूम नही होता। यह नही मालूम होता है कि पडोस मे कौन रहता है। एक दूसरे से परिचय नही होता। स्माल कम्युनिटी मे ह्यूमन रिलेशनशिप का बडा स्थान है। वहां काम के स्थान और रहने के स्थान मे बहुत बडा फासला नही होता। जीवन मे एक प्रकार की सम्पन्नता, प्रसन्नता, आनन्द रहता है। काम मे एक्सप्रेशन आफ क्रियेटिविटी होती है। हर एक मनुष्य के अन्दर कुछ बनाने की, निर्माण करने की भावना होती है। उसी भावना का विकास करने के लिए विचारक छोटे उद्योगो को और लघु उद्योगों को महत्व देते है। इसका मैं स्वागत करती हू। इसी चीज को आप खादी के कपडे पर कढ़ाई और छपाई से करना चाहते हैं तो कीजिए। खादी से सम्बन्धित हर काम इस तरह से किया जाए जिससे करने वाले को आनन्द मिले। खादी का जो बच्चों का कपडा बनता है, बडों का बनता है, वह घर मे माता बनाती है, बनाने वाली को आनन्द मिलता है। खादी से कपड़ा इस तरह से न बने जिस तरह से मशीन का कपडा बनता है। मशीन पर काम करने वालो को मालूम ही नही होता है कि मशीन से क्या निकल रहा है। मजदूर केवल कोग इन दि व्हील बन जाते हैं। पोलिस्टर की बडी बडी मशीनों के सदर्भ मे मानव की क्रियेटिविटी समाप्त हो जाती है। जब उसकी क्रियेटिविटी के अन्य रास्ते बन्द हो जाते है, समाप्त हो जाते है तो वह अधिक बच्चे पैदा करने लग जाता है। यही हमारी जनसख्या वृद्धि का सब से बडा कारण है। क्योंकि उसे अपने काम से आनन्द नही मिलता है। इस प्रकार काम के द्वारा उत्पादन का आनन्द नही मिलता, तो उसे प्रोक्रियेशन मे आनन्द आता है। यह उसके लिए रिलीज फिनोमिना बन जाता है। इससे वह टेंशन से मुक्त होता है। जीवन मे जो वायलेंस होता है वह इन चीजों मे समाप्त हो जाता है। काम के द्वारा जीवन म जो आनन्द मिलना चाहिए, सेल्फ एक्सप्रेशन मिलना चाहिए, क्रियेटिविटी मिलनी चाहिए, जो खादी और लघु उद्योगो के काम मे मिलती है। वह समाप्त हो जाती है फिर वह दिन भर मशीन का एक पुर्जा घुमाने के बाद मनुष्य ही नही रहते। आनन्द पाने के लिए वायलेंस वाले खेल सिनेमा देखते है। जानवरों की तरह हल्ला करते है। वायलेंस बढता है। यहा मोरारजी भाई ने शुमाकर साहब का जिक्र किया था। शुमाकर ने बडी बडी बेकरीज का विरोध किया था। इस वास्ते किया था कि उनमे काम करने वाले आदमी सारी रात भर काम करते है, उसका भी कोई घर परिवार है। उसकी जगह पर घर घर मे अपनी रोटी बनाने से आनन्द ही मिलेगा। वे अपनी रोटी बनाते थे सब के लिए। सबको ऐसा करने का उन्हों ने कहा था। ईश्वर की दया से हमारे घरों मे अपनी रोटी बनती है। खादी के रूप मे गाधी जी ने हमे एक दर्शन दिया था। जीवन मे एक नई दिशा, दर्शन दिया था।

उसको हमे भूलना नही चाहिए। उसे हम इस तरह से बरबाद न करे। मैं अत्यन्त विनम्र भाव से भाई जार्ज को कहना चाहती हू कि आपको पोलियस्टर कपडा बनाना है तो आप बड़ी खुशी से बनाए, हमारा कोई विरोध उसस नही है। लेकिन उसको खादी का नाम आप कृपा करके न दे। गांधी जी ने जो खादी हमे दी, शोषण मुक्त समाज के प्रतीक के रूप मे उसको आप कायम रहने दे और जिसको जवाहरलाल जी ने लिवरी आफ फ्रीडम कहा था उस खादी को आप भद्दा न बनाये, उस खादी को आप डेड्जेनरेट न करे। उसमे पोलियस्टर मिला कर के और कैपिटलिस्टों के साथ उसको आप जोडदे, यह ठीक नहीं है। मे चाहती हूं भाई जार्ज सारे सदन की भावनाओ का आदर करे, सरकार सदन की भावनाओं का आदर करे। इस विधेयक को या तो वह वापस ले ले या इसको पब्लिक ओपिनियन जानने के लिए भेज दे या इसको सिलेक्ट कमेटी मे भेज कर यह जो भारी दोष इसमे आ रहा है इसको दूर करवाये। पोलियस्टर और खादी एक साथ नहीं आ सकते, नहीं आ सकते, नहीं आ सकते।

SHRI NARENDRA P. NATHWANI (Junagadh): May I seek a clarification from the last speaker since, she understands the subject so well? I want to know for my enlightenment if she would object to the use of cotton, silk or wool grown abroad in the manufacture of khadi.

डा० सुशीला नायर आप आज्ञा दें तो मै इसका उत्तर देना चाहती हूं। मैं समझती हू कि असली खादी की स्पिरिट यह है कि जो अपने देश मे पैदा हुई ऊन, सिल्क, काटन आदि है उसको कात कर कपड़ा बनाया जाय। आज बाहर से काटन लाई जाती है। कुछ ऐसे गलत तरीके इस्तेमाल किए गए हैं कि शार्ट फाइबर काटन तो करीब करीब खत्म ही हो गई है। इसको बरनाला साहब को देखना होगा कि यह क्यों खत्म हुई। उसको दुरुस्त किया जाना चाहिए। देव कपास के पेड़ घरों मे लगाए जाए और स्वावलम्बन की दिशा मे अधिक से अधिक कार्य किया जाना चाहिये। इस बीच मे आवश्यक हो तो बाहर की कपास आदि आप इस्तेमाल करे लेकिन पोलियस्टर के बड़े बड़े कारखाने लगाकर जो पोलियस्टर तैयार होता है उसको इस खादी मे हर्गिज शामिल न करे।

SHRI O. V. ALAGESAN (Arkonam): Somebody called this an innocent-looking, simple Bill. I would like to call it an ugly-looking and highly objectionable Bill.

The hon. Mover of the Bill said that he wanted to speak in Hindi perhaps because this subject was so close to the people, but if you look into the facts as to what he is doing to khadi it would have been more appropriate if he had spoken in some non-Indian language like German, because that is what he is doing to khadi

You would have observed that objection to this Bill cuts across party lines in this House. There has been near-unanimity in opposing this Bill. He took consolation from the fact that two hon. Members supported his Bill. I do not think a third Member will come forward to support it This Bill has been variously described by hon. Members who preceded me as follows: These were the choice epithets used for this Bill—sacrilege, murder, poison, adulteration; khadi being finished, pollution, spurious, hurting the soul of khadi, last nail on the coffin of Gandhi. These were the words in which the hon. Members chose to describe the Bill. You can easily understand how objectionable this Bill is.

श्री वी० पी० मण्डल सभापति महोदय, टाइम लेने का पहला तरीका था कि A member rises in his seat and catches the eye of the Chair

[श्री बी० पी० मण्डल]

दूसरा तरीका है कि एक लिस्ट आपके पास चली जाती है उसको आप पढ़ते हैं । अब एक तीसरा तरीका यह हो रहा है कि माननीय सदस्य चेयर के पास जाकर अपना नाम लिखाते हैं । तो जो माननीय सदस्य वहां जाकर अपना नाम नहीं लिखायें उनको डिसएडवान्टेज होता है । तो यह जो प्रीसीडेंट हो रहा है कुर्सी के पास जाकर टाइम मागने का इसको आप बन्द कीजिये ।

MR. CHAIRMAN: That is not being done. I have asked them to send the slips. It is done according to the list.

SHRI O. V. ALAGESAN: Only yesterday, the hon. Prime Minister, while replying to the debate on the Sixth Plan document almost swore by Gandhism. When somebody called the Plan document as capitalist, he said, "I am neither a capitalist nor a Marxist. I would like to follow Gandhism." The irony is that today his Minister comes before the House and denies him, like Peter denied Jesus Christ.

The Bill, I should like to say, is a travesty and blasphemy of khadi. To call it polyester khadi or to introduce in the definition "man-made fibre" or use the expression "induction of man-made fibre in khadi", all this is a contradiction in term. The very character of khadi is being sought to be altered. Once this is done, it will not be khadi any more; it will not be khadi that we knew of.

The hon. mover should have also noticed that all the speeches made on this Bill were charged with emotion because many of the hon. Members, whether on this side or on that side, have a certain amount of emotional background about khadi. I do not know whether the hon. mover has such an emotional background or not. He may not have. But, I think, he will at least condescend to understand the emotional background of the hon. Members who opposed this Bill. What did the venerable member, Pandit D. N. Tiwary Ji, say? He said, "It is a matter of conscience. No party whip can function here. I will have to oppose this Bill as a matter of conscience." These are the feelings that this Bill has aroused.

What is this khadi or charkha which Gandhiji placed before the country? It was not only a symbol of our freedom struggle but it was an alternative and a counter to the big machine which, according to Gandhiji, symbolised violence and exploitation. It is against the big machine that he placed the small, almost out of date then, wooden charkha just as Sage Vashishta placed his Brahmadanda before all the arrows which King Vishwamitra and his hordes aimed at and it was Brahmadanda which swallowed all the arrows and remained safe and unhurt. Similarly, it was this small inconsequential, insignificant charkha which might have looked out of date in the eyes of many people that braved the might of the British Empire then and, finally made it wind up and go.

Such is the importance and significance of khadi. It is not a mere piece of cloth; it has got national significance; it has got international significance because only yesterday the Prime Minister told us about it: he talked about; small is beautiful—all that is contained in khadi. Other people may have to discover it. It was due to Mahatma Gandhi's genius that he resurrected this old machine which was thrown somewhere and gave it a place of pride and made it a centre of his constructive activities.

Now it is very curiously said here that the Kahdi and Village Commission has recommended something about it. What is the recommendation? Where is the recommendation, because I find that several working groups have gone into the various as-

pects of the khadi and village industries? They have made various recommendations and those recommendations have been studied and commented upon by the Khadi and Village Industries Commission. I also find that there was a working group constituted under the Presidentship of Mr. Ayyangar. That was to report, it seems, by January this year. I do not know whether it has reported. Where is the recommendation contained? What was the recommendations? How was the matter referred to the Khadi and Village Industries Commission? Was it studied in depth? How did this recommendation come out? All these things the hon. Minister should be able to tell us, because this recommendation has come very suddenly. Last November, we find that the Chairman of the Khadi and Village Industries Commission told the Press that already they were trying to make this polyester khadi. Some thousands of metres of khadi have been made, but it cannot be marketed in the various shops of the Khadi and Village Industries Commission, because it does not conform to the definition of khadi and as such cannot be sold by the Khadi and Village Industries Commission. That is what he said. Except that, we have no other information whether this Commission or the Chairman has already gone ahead with this experiment, even without the consent of the Government and without the consent of the Parliament. Is that the case? Is it the opinion of somebody who has been influenced by some other influential quarter which is now being sought to be imposed both on Government and Parliament? I would like the hon. Minister to answer this question without any ambiguity.

Now what is this polyester fibre or as it is called man-made fibre? I think there are 4 or 5 plants which make it. Their total capacity is about 25,000 tonnes per year. And what is the capital investment that has gone into making in this plant? It may be nearly Rs. 100 crores. I am told that they are being given licences to double their capacity. That means another investment of Rs. 100 crores is required. Now from where does the raw-material come, the raw-material for the polyester fibre? It is DMT and that is being sought to be manufactured in Baroda. I do not know whether these four or five plants with a capacity of 25,000 tonnes are able to get all the raw-material from within the country from the plant which is now working in Baroda. I am told another plant is going to come in Assam with 30,000 tonnes capacity. That is in the future. But even if it comes, that will be enough just to make polyester fibre in that place itself. So, where is this DMT and where from is this polyester fibre out of DMT going to come and what is the proportion of the mixture? The proportion of the mixture of this polyester fibre with cotton is 67 and 33 or at the most it may be 50:50. That means two-thirds of our cotton requirements which are now met in the country are being dispensed with. This two-third is being sought to be replaced by a material which is machine-made, which is mill-made, and the entire khadi industry is made to depend upon this mill-made raw material. Is that the concept of khadi? The concept of khadi was that all the raw materials that are found in the villages should be turned into useful articles, should be processed there and should also be consumed there. That was the concept of khadi that Gandhiji had left for us. But here khadi is going to depend upon something which is going to come out of mills! And how is it made in the mill? Do you have the machinery? No. You have to import that machinery. You have to import the various parts. I do not know whether you are importing the raw material to make DMT and polyester fibre. Why is it that khadi is being sought to be linked with polyester fibre? There should be good reasons for it. The

[Shri O. V. Alagesan]

reasons that are given in the Statement of Objects and Reasons, to say the least, are flimsy and—I do not want to use this word—false. The Statement of Objects and Reasons says:

> "The Commission has recommended that in the context of the need to cater to the fast varying tastes and trends in the consumer market, a stage has come when induction of man-made fibres in khadi besides the natural fibres has become necessary."

What are these 'varying tastes and trends in the consumer market' that have been suddenly discovered by the Khadi and Village Industries Commission? There are other materials in the market. There are mill-made goods, there are art-silk goods. The polyester filament yarn is used and art silk sarees are made and they are being consumed. Why is it that you bring the polyester fibre and club it with khadi and completely alter the character of khadi and pervert the very concept of khadi? I do not understand why it should be done. If you want, it can be used in handlooms. Now it is being used in the mill sector. If you do not want the entire polyester to be consumed in the organized sector or the mill sector, as it is called, then it can be consumed in the handloom sector. Where is the necessity, what is the rationale and what are you going to gain by bringing in and linking this polyester fibre with the production of khadi?

One reason was given by the hon. Mover: he was saying that we could employ more people. Why are you not able to employ more people now? It is expected that, in 1978-79 the scale of employment will be much more than the present scale of employment—in khadi alone; I am leaving out village industries. The present employment in khadi is about eight lakhs. In 1978-79 it is proposed to employ 11.27 lakhs of people. Therefore, where is the ground to say that, by inducting this man-made fibre in the production of khadi, you are going to employ more people? On the other hand, what is the cash outlay for the present production of khadi? It is less than Rs. 100 crores; it may be Rs. 70 to 80 crores. If you want to induct man-made fibre in the production of khadi, you have to make a large capital investment. Is it going to be a labour-intensive industry? Can anybody, by any stretch of imagination, call the DMT and polyester factories labour-intensive? The Janata Party's declared policy is to employ more people, to provide more employment opportunities. But they are now taking a step which runs counter to their very stated policy. By bringing in this man-made fibre into the production of khadi, you are lessening the employment opportunities for ordinary villagers because though these mills cost by way of investment many times what it costs in the case of production of khadi, they are not going to provide equal employment opportunities to people. So, I would like to close on this note. The Hon. Minister, the mover of this Bill, should have studied the mood of the House. Let him not undo all that Gandhiji did in this country. It will be wise of him to pause and think, to take counsel and come to the decision to withdraw this Bill.

Sir, I totally oppose this Bill.

श्री रीतलाल प्रसाद वर्मा (कोडरमा) : माननीय सभापति महोदय, इस सन्दर्भ में मैं कहना चाहूंगा कि माननीय मंत्री महोदय ने प्रस्तुत विधेयक के सम्बन्ध में जो भावना प्रकट की है वह देखन में निश्चित रूप से छोटी लगती है लेकिन वह वही कहावत चरितार्थ करती है ।

देखन में छोटी लगै,
घाव करै गम्भीर ।

खादी की पिछले 60 वर्षों से अपनी परम्परा है लेकिन उस परम्परा का, ऐसा लगता है कि पूरा हनन हो रहा है। खादी जो हाथ से काती और हाथ से बुनी जाती थी, ऐसा लगता है कि उसका यंत्रीकरण हो रहा है। ये बताते है कि प्राकृतिक रेशे से कृत्रिम रेशे की ओर जा रहे हैं। ऐसा लगता है कि हमारे उद्योग मंत्री का मतष्कि उलझी है, जो अधिक नियोजक हो रहा है। उसके साथ ही साथ खादी का भी अत्याधुनिकीकरण, अल्ट्रा-माडर्नाईजेशन करना चाहते है। महात्मा गांधी जो वस्त्र पहनते हैं, जिसको सही अर्थ में खादी कहा जाता था, वह तो पैर से गोठने के बराबर होता था, परन्तु देखने से लगता था कि उसमें कितनी सादगी है। लेकिन आज ना बीसवी शताब्दी का फैशन है टाकलेस और वाटमलैस का। हम विरोधी नही है, खादी का आप आधुनिकीकरण करे इस तरह से लोगो का प्रोत्साहन मिलेगा, इसका व्यवसायीकरण होगा लेकिन खादी एक बुनियादी चीज है। लोकमान्य तिलक जी ने 9 "स्व" बताये थे---स्वदेश प्रेम, स्वराज, स्वदेशी वस्त्र, स्वभाषा, स्वदेश-भूषा, स्वाभिमान, स्वावलम्बन, स्वसंस्कृति तथा स्वातंत्र्य। मै कहना चाहूगा कि आधुनिकीकरण के लिए यदि आप इसकी परिभाषा बदलते है तो यह खादी खादी नही रह जायेगी। फिर तो आप इसका नाम हैण्डलूम खादी रख दीजिए। आज जैसा कि मिलावट का युग है जिसमे तेल शुद्ध नही मिलता, वनस्पति मे मिलावट होती है उसी तरह से खादी मे भी मिलावट हो जाये। आप खादी के लिए भी मिलावट की कानूनी मान्यता दे दीजिए। खादी भी उसी तरह से अस्वास्थ्यकर हो जायेगी। जैसे कि और माननीय सदस्यो ने इसकी घोर आलोचना की है, मैं भी कहना चाहता हू कि जो मौलिक विचारधारा के लोग हैं, जो खादी से प्रेम रखते हैं उनकी भावनाओं पर बडा कुठाराघात होगा। इस सम्बन्ध मे मैंने एक संशोधन भी दिया था कि इस बिल को प्रवर समिति को सौंप दिया जाये क्योंकि इसपर बहुत जल्दी में विचार किया गया है। इस बिल मे केवल खादी कमीशन की शक्ति बढाने, और अधिक सदस्यो को जोडने, अधिक पावर देने या प्रशासन की व्यवस्था कराने की ही बात नही है। मंत्री जी ने निश्चित रूप से 40 करोड 80 लाख रुपए का प्रावधान इसमे किया है और सहयोग के रूप में करोडो रुपए भी आते है। जब से यह कमीशन आया, इसके द्वारा बडे-बडे शहरो मे जगमगाने वाले खादी आश्रम बनाये गये, रिबेट नाम पर, सरकार के नाम पर, बहुत से गोलमाल और घपले सब जगह हुए जिनकी काफी चर्चा भी हुई। इसलिये मेरा निवेदन है कि इस विधेयक के लिये जल्द-बाजी नही करनी चाहिये। इस मे यह देखना होगा कि इस के द्वारा नियोजन अधिक हो। जिस तरह से महात्मा गांधी ने कल्पना की थी कि गाव-गाव के लोगो मे, प्रखण्ड स्तर पर स्वावलम्बन के सिद्धान्त और स्वदेसी वस्त्रो की भावना अधिक बडे---हमे उस दृष्टि से इस विधेयक पर विचार करना होगा। लेकिन जिस तरह से आप करने जा रहे हैं कि यन्त्रीकरण के द्वारा पैट्रो-कैमिकल से बने हुए धागे का इस्तेमाल खादी मे किया जाये, इस तरह से तो वह किसी भी अर्थ मे खादी नही कही जा सकती।

इस लिये मेरा संक्षेप मे आप से यही आग्रह है कि आप इस बिल को प्रवर समिति को सोप दे, जो इस विधेयक के हर आस्पेक्ट पर, हर पहलू पर विचार कर के सही अर्थों मे इस विधेयक को यहा लाये, जो जन-भावनाओं के अनुरूप हो, जिस मे ज्यादा लोगो के नियोजन की व्यवस्था हो और जो आज घुटालों का बिजनस चलने लगा है, वह रुके और जिस मे व्यवसायीकरण न हो कर, भारत की मर्यादा, हमारी संस्कृति और स्वभूषा का अर्थ मर्यादित हो सके।

MR. CHAIRMAN: Mr. Yuvraj.

SHRI B. P. KADAM: Before that, may I respectfully know if a proper yardstick is applied for calling out the names of Members to speak? Only two Members from the Congress (I) have spoken, while from Congress, four Members have taken part in this debate. Is the time apportioned with reasonableness if not with mathematical accuracy according to the strength of the various parties in the House?

MR. CHAIRMAN: Justice will be done in all cases. I am calling the Members according to the list prepared by the Deputy-Speaker. I have enquired; two more names will be called from your Party. Justice will be done in every case.

SHRI B. P. KADAM (Kanara): Not only justice should be done, but let us feel that justice is done.

MR. CHAIRMAN: Shri Yuvraj.

श्री युवराज (कटिहार) : सभापति जी, खादी तथा ग्रामोद्योग आयोग (संशोधन) विधेयक, 1978 के जरिये यह प्रस्ताव है कि आयोग के वित्तीय सलाहकार और मुख्य कार्य-पालक अधिकारी को आयोग का क्रमशः सदस्य और सदस्य-सचिव नियुक्त किया जाये। इस के अतिरिक्त यह प्रस्ताव है कि खादी की परिभाषा में "कृत्रिम फाइबर" को भी शामिल किया जाये तथा इस आयोग में यह शक्ति निहित कर दी जाये कि वह ऊंचे वेतन वाले व्यक्तियों को भी स्वयं नियुक्त कर सके।

मैं केवल इस के अन्य बातों पर अपने विचार व्यक्त करूं, सब से पहले में यह कहना चाहूंगा कि जिस आयोग के वित्तीय सलाहकार और मुख्यकार्यपालक अधिकारी आयोग के वित्तीय मामलों का नियंत्रण करते हैं और प्रशासन की व्यवस्था करते हैं—कोई आवश्यकता नहीं थी कि नौकरशाही की पकड़ को मजबूत करने के लिये जो स्वयं इस काम को देखते हैं, उन को आयोग का सदस्य मनोनीत कर दिया जाये। इतना ही नहीं, अभी पहले गैर-सरकारी सदस्य इस के चेयरमैन और सैक्रेटरी होते थे, अब इस के सैक्रेटरी होंगे मुख्य कार्य-पालक अधिकारी। आज तक यह संगठन गैर-सरकारी संस्था के रूप में काम करता रहा है, लेकिन अब इस के वित्तीय सलाहकार को इस का सदस्य और मुख्य-कार्य-पालक अधिकारी को इस का सदस्य-सचिव बना कर हम नौकरशाही को इस पर नियन्त्रण करने का मौका दे रहे है, मेरी दृष्टि मे जिस की कोई आवश्यकता नही थी। अगर आप बढ़ाना ही चाहते थे तो दो गैर-सरकारी सदस्य बढ़ा देते, इस सदन के दो सदस्यों को बढ़ा देते, लेकिन इस की कोई आवश्यकता नही थी कि जो अधिकारी वहां पर काम करते हैं, वित्तीय मामलों को सम्भालते हैं, प्रशासन को सम्भालते हैं—उन को इस का सदस्य बना दिया जाय।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि इस बिल से खादी बहुत विवादस्पद हो गई है और मैं माननीय सदस्यों की भावनाएं देख रहा था। शत-प्रतिशत सदस्यों ने पोलियेस्टर फाइबर के सम्बन्ध में प्रतिकूल राय व्यक्त की है और मैं यह कह देना चाहता हू कि गांधी जी ने कहा था कि फैन्स कपड़े को हम खादी नहीं कह सकते और उस समय जब चरखे से मोटा सूत काता जाता था और बढ़िया धागा नहीं निकलता था और उस समय जब अम्बर चरखे का अनुसंधान नहीं हुआ था, तो मिल वालों ने एक बार जब यह कहा था कि जो मिलों से यह मोटा कपड़ा निकलता है, वह मिल खादी है, तो गांधी जी ने उस पर आपत्ति की थी और कहा था कि हाथ से कता हुआ जो सूत हो और उस से बना हुआ जो हाथ का कपड़ा हो और ग्रामोद्योग या खादी भंडार में जिस खादी की बिक्री हो,

वही खादी कहलाएगी । ऐसी गांधी जी ने खादी की परिभाषा की थी । आज सम्पूर्ण देश में गांवों में खादी कुछ न कुछ लोग पहनते हैं और जो पुराने राष्ट्रीय विचारधारा वाले लोग हैं वे उसको पहनते हैं .... (व्यवधान) ... सब लोग नहीं पहनते हैं लेकिन फिर भी गावों में लोग उस को पहनते हैं और कपड़े का जो टोटल प्रोडक्शन होता है, उस में केवल एक परसेन्ट खादी होती है और 99 परसेन्ट कपड़ा मिलों में बनता है । एक परसेन्ट खादी से हम मांग की पूर्ति करते हैं । इसलिए हम चाहते हैं कि वह गरीब आदमी जिस को शिक्षा नही मिलती, जिस के पास अपनी जमीन नही है, अगर उस के लिए आप चरखे की व्यवस्था कर देते और जो मिकेनिक हैं या मिस्त्री हैं, उन की अगर वहां पर व्यवस्था कर देते, तो गांवों में हरिजनों, आदिवासी, भूमिहीन साधारण लोग 3, 4 रुपये रोज इस से कमा कर अपना पेट पाल सकते थे । आप खादी में कितने लोगों को काम देते हैं । 1977–78 में खादी मे 10.23 लाख लोगों को आपने काम देने की आशा की थी और विलेज इंडस्ट्री में 15.37 लाख लोगों को । यह ठीक है कि 1976–77 मे जहां खादी में 8.98 लाख लोगों को काम मिला था और ग्रामोद्योगों में 12.46 लाख लोगों को काम मिला था, वहा 1977–78 मे ग्रामोद्योग और खादी में जिन लोगों को रोजी मिली है, उन की संख्या लगभग 15, 16 प्रतिशत बढ़ी है लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि अच्छी व्यवस्था के अभाव मे जो गांवों में चरखे चलते हैं, उन की कोई देखभाल नहीं हो पाती है और ऐसी व्यवस्था के चलते जो सूत काता जाता है वह खादी भंडारों में पड़ा रहता है और उस की देखरेख ठीक नहीं होती है । इस कारण से जो सूत कता रहता है वह गांवों में पड़ा रहता है या बुनकर स्वयं कपड़ा बुन लेते हैं और उस का इस्तेमाल वहां पर होता है । इस तरह से अभी जो व्यवस्था चल रही है वह बिलकुल अव्यवस्थित रूप से चल रही है ।

मैं यह भी कहना चाहता हूं कि फाइबर का एक्सपेरीमेंट आप ने तमिलनाडु में किया है और आप कहते हैं कि वह बहुत एन्कौरेजिंग है लेकिन हमारे जो भाई तमिलनाडु और दक्षिण के दूसरे भागों से बोल रहे थे और जिस तरह से वे अपनी भावना व्यक्त कर रहे थे । उस से पता चलता है कि एक भाई ने भी पोलियेस्टर का समर्थन नहीं किया है । यह पेट्रो-केमिकल है, पानी में से यह रेशा निकलता है और बहुत कमजोर होता है । गर्म पानी में इस को धो नहीं सकते और इस को निचोड भी नही सकते हैं । इसलिए मैं यह समझता हूं कि खादी मे, जिस को लोग स्वयं कातते हैं और उस सूत से कपड़ा बुनते हैं, उस मे कोई इस तरह का रेशा मिलाने की जरूरत नहीं है ।

आज मानव सर्जित रेशे को खादी में मिला कर, खादी को विवादास्पद बनाना मैं समझता हूं कि जनता पार्टी के लिए कलंक की बात हैं । गाधी जी की भावना के साथ आज भी हिन्दुस्तान की जनता की भावनाएं जुड़ी हुई हैं । यह खादी अंग्रेजों के जमाने में एक त्याग का अस्त्रथी, एक लड़ाई का अस्त्र थी। लंकाशायर और मेनचेस्टर से यहां कपड़ा आता था जो कि अंग्रेजों द्वारा बनाया जाता था । गाधी जी ने हमें कहा था कि हम मोटा कपड़ा पहनेंगे लेकिन अंग्रेजों द्वारा बनाये कपड़े का त्याग करेंगे । यह भावना उस समय काम करती थी । सभापति जी यह मानव अजित रेशे को जो खादी में मिलाने का प्रावधान इस विधेयक द्वारा किया जा रहा है जिससे कि खादी में चमक आजाए और नौजवान लोग इसकी तरफ़ आकर्षित हों, मैं समझता हूं कि इसको वापस लिया जाना चाहिए ।

[श्री युवराज]

सभापति जी अब रह गयी बात कमीशन में नियुक्ति की । आप कमीशन को उन सेवी संस्थाओं तकनीशियन लोगों की नियुक्ति का अधिकार देते जो खादी बनाते हैं लेकिन आप कमीशन को यह अधिकार दे रहे हैं कि वे अपने सदस्य अधिकारियों में से बढ़ा सकें । इससे क्या होगा कि कमीशन के जो आफिसर हैं, पदाधिकारी हैं, प्रशासन का काम देखते हैं, वित्तीय सलाहकार हैं, कार्यपालक अधिकारी हैं, वे इसके सदस्य बन जायेंगे । उनको इसका सदस्य बनाने की आवश्यकता नहीं है ।

जहां तक पोलिस्टर को खादी में मिलाने की बात है, इसको खादी में डाल कर खादी को विवादास्पद बनाने की भी आवश्यकता नहीं है । इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि इस बिल का जो अंग विवादास्पद है, उसको वापस लेना चाहिए, या इसको जनमत जानने के लिए प्रचारित करना चाहिए ताकि यह मालूम हो जाए कि जनता की इसके बारे में क्या भावना है । उसके बाद ही इसको यहां लाने की आवश्यकता है ।

सभापति महोदय . श्री बी० पी० कदम ।

चौधरी बलबीर सिंह (होशियारपुर) : आप हम को भी बुलाइये । जो लोग इस बिल के खिलाफ बोल रहे हैं, आप उनको ही बुला रहे हैं । जो इसके हक में बोलना चाहते हैं, उनको भी बुलाइये ।

SHRI B. P. KADAM (Kanara): This amending bill seeks two things—firstly to amend the very definition of khadi and it seems to have evoked serious doubts and reactions and protests.

The very words 'man-made fibre yarn handspun in India' all these things have evoked serious protests. The hon. Minister in the Statement of Objects and Reasons has stated that the Commission had recommended certain things and this had to be done to make it more attractive. Hurriedly I tried to go through the Commission's Report yesterday, but I could not find anything. I must confess I hurriedly tried to skip over that.

Then there is another book. I went through that today but I could not find any such recommendation. Then in my respectful opinion ...

(Interruptions)

That was the book available in the library. I must have been misled there.

Then of course in the *Hindu* dated November, 11 there are the Chairman's remarks about the polyester khadi in a very flamboyant language and it seems that this has accelerated the whole work

There have been already considerable doubts about the Khadi produced with lot of mill khadi. That is also there.

In the Deccan Herald of Bangalore of 15th October, 1977 such a remark is there. It was said to be very popular. An enquiry revealed that a particular brand of Khadi produced in the mill was popularised in various ways. A particular concern was related to one Member of the Khadi Board itself. We cannot understand why these things have happened.

The hon. Member, Shri Mavalankar, has said that apart from being attractive, it was a question of a code of conduct to have a particular dress. It denotes or it depicts character, devotion to duty and to national service. In fact, these things have been associated with devotion to work, a missionary zeal, national rejuvenation and so on. Apart from its importance in the national freedom movement, all these things have been associated

with it. Dress is prescribed not only now, but, there was a particular code of conduct during the renaissance movement, from the days of Raja Ram Mohan Roy and ever prior to that, during ancient times, during the writings of the Upanishads.

Thereafter, during the era of Gautama Buddha, the missionaries had a particular form of dress The missionaries went far up to Palestine in the west; in the east they went up to Taiwan, Japan, Korea and so on; in the South they went to Burma and Ceylon and they conveyed the message of discipline, the message of code of conduct and the message of love, brotherhood and peace. These are the things involved here and not only the question of attractive dress which would look more elegant. I fully agree with the hon. Member, Shri Mavalankar.

Then, of course, two things I want to stress about the pomp of the officers of the Commission. Certain things have been said but I would like to refer to one thing. It is said:

> "The overhead charges of the Commission and its establishment eat away a large part of the resources allotted for their development and mock at the utter poverty of the village artisan who earns a bare pittance after 8 or 10 hours of work every day".

This quotation is from The *Hindu*.

Now I am quoting from the *Hindustan Times* Editorial dated the 22nd of October. It says:

> "Air or air-conditioned travel, an unlimited number of staff cars and cocktail parties do not go with the milieu of Gandhian economics.
>
> Not so long ago, the Khadi Commission was shocked when a newspaper correspondent refused to travel by air from Delhi to Ahmedabad at its invitation and chose to travel third-class by train."

—and this correspondent was called quixotic!

I am speaking about this because, after our freedom, a large number of simpleton-seeming, quiet-posing wolves have sprung up all over the country in the guise of Khadi, in the guise of village industries, in the guise of so many things, to exploit the poor workers. Sir, that is the real curse we have to root out by eliminating such elements.

I know the Hon. Minister has been a trade union leader. All along he has been a trade union leader. He must solve the problems of the workers.

MR. CHAIRMAN: You may please continue tomorrow. The House will resume this discussion tomorrow. Now the House stands adjourned to meet tomorrow at 11 A.M.

18.00 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Wednesday, May 10, 1978/Vaisakha 20, 1900 (Saka).

GMGIPMRND—PMR—1106 LS—JC— 1531—15-7-78—880.